जनवरी 2005
Rs. 12 /-
चन्दामामा
इस अंक में
देखिए जी-मैन के
कारनामे
G-man
नव वर्ष की शुभ कामनाएँ

Orissa
The Soul of India

चिलिका

परमोल्लास का प्रवेश द्वार

नीले प्रसार के विलास में झिलमिलाती, भारत की, खारे जल की विशालतम झील, रहस्यमयी चिलिका विश्रांत है। चारों ओर से पहाड़ियों से घिरी और मरकत-हरित द्वीपों से चिह्नित चिलिका विश्व भर के पक्षियों के लिए शरद ऋतु की सैरगाह और अदम्य डॉलफिनों का गृह है। विविध श्रेणियों की जलीय वनस्पतियों और जीवजन्तुओं से भरपूर चिलिका जैविक विविधता के मुख्य स्थलों में से एक है। नावों और डोंगियों से भरपूर यह शानदार झील भारत के सर्वश्रेष्ठ रंगबिरंगे रूप को प्रतिविम्बित करती है। सचमुच, चिलिका आँखों और दिलों के लिए सबसे अधिक स्वादिष्ट भोज्य है।

ओ.टी.डी.सी. के विशेष पैकेज पर्यटन

पैकेज - १ : पुरी-कोणार्क-भुवनेश्वर-चिलिका (सातपदा) : २ रातें और ३ दिन

पैकेज-मूल्य : वातानुकूलित आवास तथा परिवहन - प्रति व्यक्ति २२९९ रु.
अवातानुकूलित आवास तथा परिवहन - प्रति व्यक्ति १७९९ रु.

पैकेज - २ : वन्य जीवन विशेष : चाँदीपुर-ऑन-सी-सिमलीपाल-भितरकनिका
वन्य जीवन अभयारण्य : (३ रातें और ४ दिन)

पैकेज-मूल्य : वातानुकूलित आवास तथा परिवहन (जुलुंग को छोड़कर) - प्रति व्यक्ति ३२९९ रु.
अवातानुकूलित आवास तथा परिवहन - प्रति व्यक्ति २२९९ रु.

पैकेज - ३ : चिलिका-दर्शन विशेष : बारकुल-ऑन-चिलिका-क्रूज
चिलिका झील में बारकुल से सातपदा तक
(विशेष आकर्षण : कालीजय-नलबन-राजहंस-डॉलफिन-सी-माउंथ) पुरी-कोणार्क : २ रातें और ३ दिन

पैकेज-मूल्य : वातानुकूलित आवास तथा परिवहन - प्रति व्यक्ति २७९९ रु.
अवातानुकूलित आवास तथा परिवहन - प्रति व्यक्ति २०९९ रु.

पैकेज में ये सुविधाएं शामिल हैं - वातानुकूलित और अवातानुकूलित आवास में दो व्यक्ति एक साथ, भोजन (नाश्ता, लंच, शाम की चाय और डिनर), वातानुकूलित/अवातानुकूलित परिवहन टाटा स्यूमो।
प्रवेश शुल्क (कैमरा और विडिओ कैमरा को छोड़कर), चिलिका झील में बोटिंग और भितरकनिका।
शर्तें : कम से कम ८ व्यक्तियों के रहने पर ही पैकेज पर्यटन पर जायेगा। पैकेज की दरें परिवर्तित हो सकती हैं।

आगामी पर्व
कलिंग महोत्सव
४-५ फरवरी २००५

सूचना और टिकट के लिए सम्पर्क करें:
मैनेजर (मार्केटिंग), ओ.टी.डी.सी. लि. (मुख्य कार्यालय), पंथानिवास (ओल्ड ब्लॉक),
लेविस रोड, भुवनेश्वर - ७५१ ०१४ फोन - ०६७४-२४३२८२

For more information contact: Director, Tourism; Paryatan Bhavan; Bhubaneswar-751014, Orissa, India
Tel: (0674) 2432177, Fax: (0674) 2430887, e.mail:ortour@sancharnet.in, website:www.orissatourism.gov.in
Tourist Offices at; **Chennai:** Tamilnadu Tourism Complex, Ground Floor, Near Kalaivanar Arangam, Wallajah Road, Chennai - 600002, Ph: (044) 25360891, **Kolkata:** Utkal Bhawan 55, Lenin Sarani, Pin-700013, Tel: (033) 22443653, **New Delhi:** Utkalika, B/4 Baba Kharak Singh Marg, Pin - 110001, Telefax (011) 23364580

NATURATA

देखिए तो कौन दे रहा है मम्मी को

एक नया घर!

GINI & JONY Presents

KIDS KA KAMAAL CONTEST

देखो और जीतो, शाम 4 से रात 8 तक

हंगामा टीवी पर जीतना बहुत आसान है. बस हर दिन शाम 4 से रात 8 बजे हंगामा टीवी देखिए और रोज़ जीतिए अपने माता पिता के लिए फ़्लैट्स, कार्स और मलेशिया की सैर जैसे ढेरों आकर्षक इनाम. तो देखिए और जीतिए! कॉन्टेस्ट की जानकारी नीचे दी गई है:

Associate Sponsor ADD Achiever

Holiday Sponsor

शर्तें लागू. नियम और शर्तोंकी विस्तृत जानकारी के लिए www.hungamatv.com पर लॉग करें.

JWT.1670.2004

12 अंकोंवाला अपना लकी नंबर कैसे बनाए ?

पहले 6 नंबर आपकी मम्मी के जन्मदिन को दर्शाते हैं और अगले 6 नंबर आपके पापा के जन्मदिन को. उदाहरण के लिए, अगर आपकी मम्मी का जन्मदिन है 25 सितंबर, 1971 और आपके पापा का 26 दिसंबर, 1966 है तो आपका लकी नंबर होगा: 250971261266. समझ गए न! तो साथ दिया कोड भरिए, हंगामा टीवी देखिए और जीतिए!!

नाम :

कॉन्टेस्ट कोड :

D	D	M	M	Y	Y	D	D	M	M	Y	Y
माता						पिता					

चन्दामामा सम्पुट - १०९ जनवरी २००५ सञ्चिका - १

अंतरंग

विशेष आकर्षण

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20

Remittances in favour of
Chandmama India Ltd.
to

Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal,
Chennai - 600 097
E-mail :
subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा बारह अंक ९०० रुपये।
भारत में बुक पोस्ट द्वारा बारह अंक १४४ रुपये।
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या मनी-ऑर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड' के नाम भेजें।

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

एक व्यावहारिक नव वर्ष - संकल्प

राष्ट्रीय स्तर पर किये गये एक सर्वेक्षण का जो परिणाम सामने आया है, वह, यदि दहला देने वाला नहीं है, तो भारत में प्रारम्भिक शिक्षा की स्थिति के लिए सम्मानजनक भी नहीं है, जो २०१० तक प्रत्येक बच्चे को स्कूल भेजने का लक्ष्य बना रहा है। यह सर्वेक्षण मुम्बई के एक गैर सरकारी संस्था 'प्रथम' द्वारा सम्पन्न किया गया है।

यह सर्वेक्षण, जो लगभग ३० राज्यों में उतने ही जिलों के प्रतिनिधिक समूहों में किया गया और - ७ से १० वर्ष तथा ११ से १४ वर्ष तक - दो आयु वर्गों में सीमित रखा गया, यह बताता है कि वर्ष के आरम्भ में स्कूल में दाखिल होनेवाली कुल छात्राओं की एक-छठवीं संख्या कुछ ही महीनों में स्कूल छोड़ देती है।

विद्यार्थियों की कुल संख्या की औसतन एक चौथाई के छात्र-छात्राएँ दोनों इतने कुशल नहीं होते कि अपने आप एक पूरा वाक्य लिख सकें, यहाँ तक कि श्रुतलेख बोलने पर भी नहीं कर सकते। उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद और लखनऊ जिलों के सरकारी विद्यालयों में ७ से १० वर्ष के ८० प्रतिशत बच्चे वाचन करने में असमर्थ रहते हैं। गैर सरकारी विद्यालयों में स्थिति थोड़ी-सी बेहतर है।

हमारे देश को, जो चेचक तथा मलेरिया जैसी महाविपत्तियों को उन्मूलित कर देने का दावा करता है और पोलियो के विरुद्ध वैसी ही सफलता के द्वार पर है, निरक्षरता जैसी महा व्याधि की क्यों उपेक्षा करनी चाहिये? जब भारत सन् २०२० तक एक महाशक्ति बनने का सपना देख रहा है, हमें शीघ्र ही प्रत्येक नागरिक को कम से कम व्यावहारिक दृष्टि से, पंडिताऊ दृष्टि से न सही, साक्षर बनाने का युद्ध स्तर पर प्रयास करना आरम्भ कर देना चाहिये।

इस सम्बन्ध में संकल्प करने के लिए हमें किसी शुभ मुहूर्त या दिवस की प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिये।

सम्पादक: विश्वम

Visit us at : http://www.chandamama.org

पाठकों के लिए कहानी प्रतियोगिता (जुलाई)

सर्वश्रेष्ठ विजेता प्रविष्टि

दरअसल वैद्य ने जमीन्दार को देखते ही यह समझ लिया था कि उसे किसी प्रकार की शारीरिक बीमारी नहीं है। फिर भी वह हर रोज उससे मिलकर बातचीत के दरम्यान यही जानने की कोशिश की कि क्या उसे कोई रोग है। जितनी बार भी जमीन्दार और वैद्य की मुलाकात हुई, हर बार वैद्य ने उसे किसी शारीरिक बीमारी से मुक्त पाया। अतः वैद्य ने उसे दवा देने की तत्काल जरूरत नहीं समझी और वह दवा देने से टालता रहा। वैद्य अलग से जमीन्दार के कर्मचारियों से मिलता रहा था और उसने यह जान लिया कि रोजगार ठीक से न चलने के कारण जमीन्दार का शरीर शिथिल पड़ गया है। और तरह-तरह की बीमारियों की कल्पना करने लगा है।

जमीन्दार ने शिथिलता को बीमारी समझ कर वैद्य से मुलाकात की थी। समय बीतने पर जमीन्दार का रोजगार फल-फूल गया। उसकी चिंता जाती रही और वह पुनः चाक-चौबन्द हो गया। छः महीनों बाद जब वैद्य वापस जमीन्दार से मिला तब जमीन्दार पूरी तरह स्वस्थ था। वैद्य ने उसे सारी बातें समझाई। जमीन्दार अब समझ गया कि वैद्य दवा देने से क्यों टालता रहा। वह वैद्य की कुशलता से प्रभावित हुआ और उसने उसे पुरस्कार देकर विदा किया।

साहिल कुमार मिश्रा, लाट नं-१, मकान नं-४१,
मुगलसराय, जिला-चन्दौली, पिन-२३२१०१
(उत्तर प्रदेश)

अजीब सपना

शिवराम लक्ष्मीपुर गांव का निवासी था। वह उस गांव के एक धनी परिवार का युवक था। उसके माता-पिता उसके बचपन में ही गुजर चुके थे, इसलिए उसकी फूफी ने उसे पाला-पोसा। बचपन से ही वह अव्वल दर्जे का सुस्त था। खेत का काम खुद नहीं करता था। बल्कि और नौकरों पर छोड़कर गांव में मटरगस्ती करता रहता था।

एक दिन, अमावस्या की रात को जब खाकर खो गया, उसने एक अजीब सपना देखा।

उस सपने में उसने देखा कि दुर्गा के मंदिर के सामने सोने का एक सिंहासन है। उस सिंहासन पर वह खुद आसीन है। उसके सिर पर एक उल्लू बैठा हुआ है। गांव के सब लोग दुर्गा की पूजा किये बिना उसकी पूजा कर रहे हैं और नैवेद्य चढ़ा रहे हैं। दूर पर खड़ा एक कुत्ता उसे लगातार देखते हुए भौंक रहा है।

शिवराम जाग उठा। वह उस सपने को भूल नहीं पाया। उसने फूकी से इस सपने का मतलब पूछा। फूफी हँस पड़ी और बोली "अरे शिव, सपने देव-रहस्या होते हैं। हम जैसे लोगों की समझ के बाहर होते हैं। हमारा ग्रामाधिकारी हरिनारायण बुद्धिमान है। उससे पूछो तो वह तुम्हें इसका रहस्य समझायेगा।"

शिवराम, हरिनारायण से मिला और अपने सपने के बारे में सविस्तार बताया। तब हरिनारायण ने कहा, "तुम अपने आप को बहुत बड़ा आदमी समझ रहे हो। इसी कारण तुमने ऐसा सपना देखा।"

तब शिव ने कहा, "मैंने अपने आपको कभी भी बहुत बड़ा आदमी नहीं माना। मैंने कल्पना भी नहीं की कि मैं किसी देवता से बड़ा हूँ। ठीक है, आपका कहा सच भी मान लूँ तो कुत्ता मुझे देखते हुए क्यों भौंकने लगा? उल्लू मेरे सिर पर क्यों बैठ गया?"

कविता चौधरी
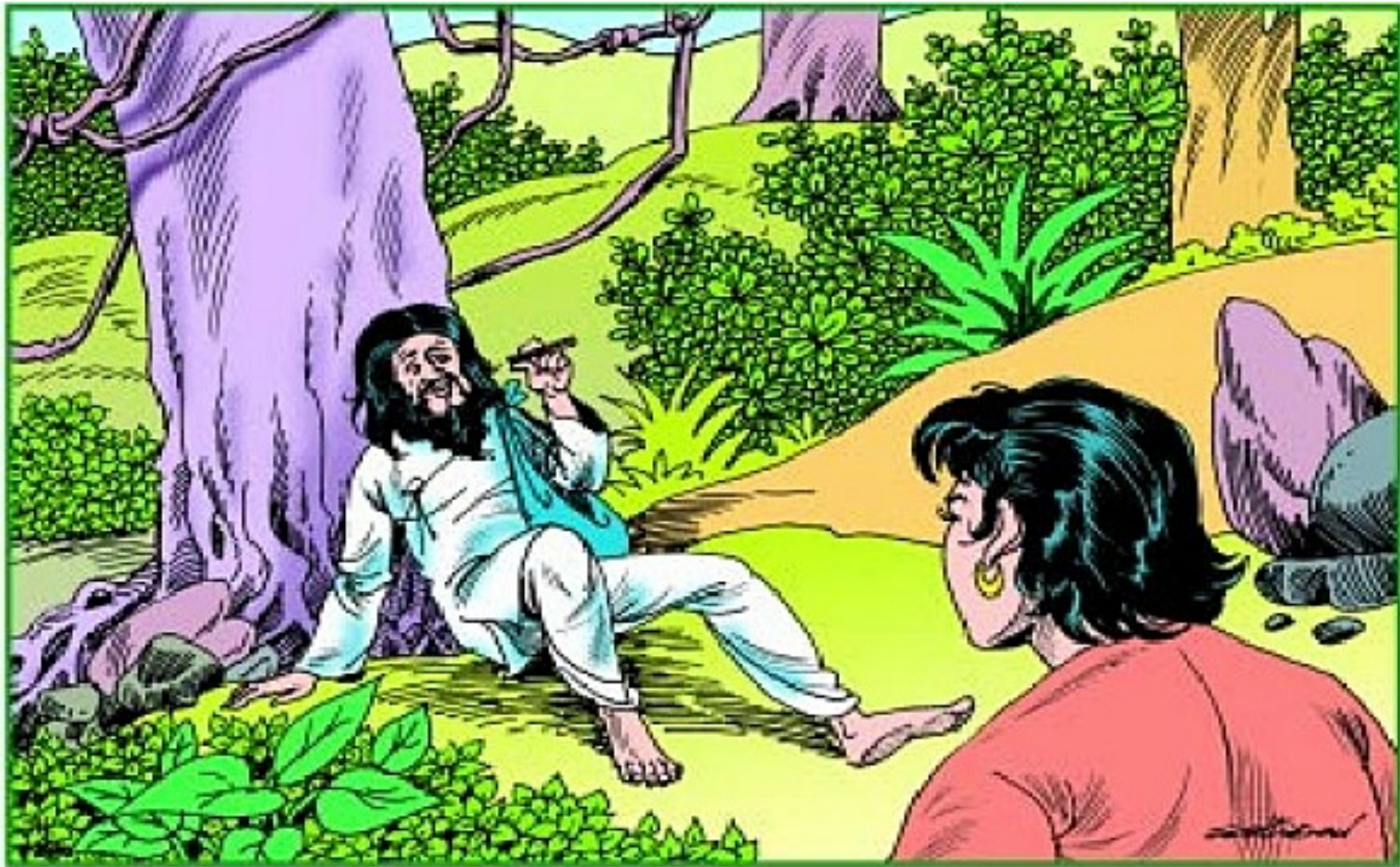
हरिनारायण ने अपना सिर खुजलाते हुए कहा, ''हमारे पड़ोसी गांव के श्रीधर ने सपनों के बारे में कई ग्रंथों का अध्ययन किया। उससे पूछना।''

शिव, श्रीधर से मिला और अपने संदेह व्यक्त किये। चकित होते हुए उसने उसे दो-तीन बार ग़ौर से देखा और कहा, ''तुम्हारे गांव में कोई अनर्थ होनेवाला है, इसीलिए गांव के लोग देवी की पूजा न करके तुम्हारी पूजा कर रहे हैं।''

शिवराम को उसका दिया विवरण पसंद नहीं आया। उसने पूछा, ''तो फिर कुत्ते और उल्लू के बारे में आपका क्या कहना है?''

''कुत्ता भूखा है, इसलिए वह भौंक रहा है। देवी की पूजा न कर, लोग तुम्हारी पूजा कर रहे हैं, इसलिए तुम्हारा अनिष्ट सूचक उल्लू तुम्हारे सिर पर बैठ गया है।'' श्रीधर ने कहा।

श्रीधर से अनुमति लेकर वह अपना गांव जाने निकल पड़ा। गांव में पहुँचने के बाद थकावट की वजह से वह एक पेड के नीचे बैठ गया। वहीं बैठे वैरागी ने उससे पूछा, ''अरे शिवराम, कुछ दिनों से दिख नहीं रहे हो। कहाँ गये थे?''

गांव के लोग उस बैरागी को पागल मानते हैं और जब देखो, उसकी हँसी उड़ाते रहते हैं। शिव को भी इसका पता है। फिर भी उसने बैरागी से कहा, ''मैंने एक अजीब सपना देखा। उसका मतलब जानने के लिए गावों में घूमता रहा। आज ही लौट रहा हूँ।''

बैरागी ने हँसते हुए कहा, ''किसी ने भी उसका

सही मतलब बताया नहीं होगा। है न?''

''हाँ, हाँ तुमने ठीक कहा। कोई भी उस सपने का मतलब समझा नहीं सका। पर, तुम्हें कैसे इस बात का पता चला?'' शिवराम ने पूछा।

''अरे मूर्ख, तुम्हारे सपने का मतलब समझानेवाला इस भूमि पर एक ही मानव है। वह कोई और नहीं, मैं स्वयं हूँ।''

शिवराम ने लंबी सांस खींचते हुए कहा, ''ठीक है, बताना कि इस सपने का क्या मतलब है?'' फिर उसने उस सपने का पूरा विवरण दिया।

बैरागी ने ठठाकर हँसते हुए कहा, ''सुनो। लोगों में दैव भक्ति दिन ब दिन कम होती जा रही है। लोगों में स्वार्थ और सुस्ती तीव्र रूप से बढ़ते जा रहे हैं। इसका जीता-जागता उदाहरण है, लोगों की, तुम जैसे निकम्मों और सुस्तों की पूजा करना। अब रही सुवर्ण सिंहासन की बात । वह तुममें भरे अहंकार व दुराशा का द्योतक है।

''कुत्ता क्यों भौंकता रहा? उल्लू मेरे सिरपर क्यों गिरा?'' शिवराम ने पूछा।

बैरागी ने कहा, ''तुम्हारी फूफी तुम्हें हर रोज़ पेट भर खाना खिलाती है और साथ ही उस कुत्ते को भी। वह कुत्ता तुमसे घृणा करता है, क्योंकि अपने खेत के काम खुद न करके दूसरों से करवाते हो और गांव में बेकार घूमते रहते हो। अपनी घृणा को प्रदर्शित करने के उद्देश्य से ही वह भौंकता है। अब रही, उल्लू की बात। उल्लू को अंधकार बहुत पसंद है। सुस्ती व अज्ञान में ज़िन्दगी गुज़ारनेवाले तुम अंधकार से भी बढ़कर घोर अंधकार हो। इसी वजह से उल्लू ने प्यार से तुम्हारा आश्रय लिया।''

शिवराम ने हाथ जोड़कर कहा, ''तुम पागल नहीं हो, महान बुद्धिमान हो। सपने के मतलब को समझाने की तुम्हारी शैली और पद्धति मुझे बेहद पसंद आयी। अब मेरी आँखें खुल गयीं।''

वह जब निकलने ही वाला था, बैरागी ने उसे रोकते हुए कहा, ''देखो, जब पूरा गांव चिल्ला-चिल्लाकर मुझे पागल ठहरा रहा है, तो मुझे पागल न ठहरानेवाले तुम कौन होते हो? जा, जा, अब मुझे इस गांव में नहीं रहना है,'' कहता हुआ बैरागी वहाँ से चला गया।

सज्जन की संगति

तरी गाँव के बड़े किसानों में से भूषण भी एक था। उसका घर बहुत बड़ा था। चारों भाई उसी घर में रहते थे। हर शाम को घर के और पड़ोसियों के बच्चे इकट्ठे होते थे और साथ-साथ खेलते थे। उनके खेल-कूदों से कोलाहल मच जाता था।

एक दिन सूर्यास्त के बाद जब अंधेरा छा रहा था तब घर के सामने एक घोड़ा-गाडी आकर रुकी। बच्चों ने आतु र हो देखा कि अंदर कौन है। तब तक गली के चबूतरे पर बैठे भूषण और उसका छोटा भाई उठकर गाड़ी के पास आये और गाडी से उतरी बूढ़ी से पूछा, ''ताई, कैसी हो? तबीयत ठीक है न?''

उस बूढ़ी को देखते ही बच्चों के चेहरे आनंद से खिल उठे। चिल्लाने लगे ''दादी आ गयी, दादी आ गयी।'' कहते हुए, उन्होंने बूढ़ी को घेर लिया।

यह बूढ़ी भूषण की बड़ी माँ सावित्री है। वहाँ से चार कोस की दूरी पर गोकुल में रहती है। उसे भूषण के परिवार से और उनके बच्चों से विशेषकर लगाव है। वह उन्हें कहानियाँ सुनाती रहती है, जिन्हें सुनते हुए वे खाना भी भूल जाते हैं।

रात हो गयी। सब बच्चे भोजन कर चुकने के बाद एक जगह पर इकट्ठे हो गये। दादी ने भूषण के सबसे छोटे बेटे को देखते हुए पूछा, ''अरे गोपी, हाथ में यह पट्टी क्यों बाँध रखी है?''

गोपी जवाब में कुछ कहने ही जा रहा था तो भूषण की पत्नी ने दखलंदाजी करते हुए कहा, ''सासु, यह स्कूल में हर नटखट बच्चे से दोस्ती करता है। किसी बात पर ये आपस में झगड़ने लगते हैं और यह घायल होकर लौटता है।''

तब दादी ने उसे अपनी गोद में बिठाया और कहा, ''यह भी नटखट ही होगा। नटखट ही दूसरे नटखट से दोस्ती करता है।'' फिर उसने गोपी को संबोधित करते हुए कहा, ''गोपी, ध्यान से सुनो। सबसे उत्तम है, सज्जन की संगति। इसका

मतलब है, अच्छे लोगों से मैत्री करना। अब मैं तुम्हें ऐसे ही सज्जन ही संगति के बारे में कहानी सुनाने जा रही हूँ। ध्यान से सब सुनो।'' फिर वह यों कहने लगी।

बहुत पहले की बात है। रामापुर में एक भूस्वामी रहा करता था। वह बहुत ही धार्मिक और दयालु था। श्रीकांत नामक उसका एक बेटा था। वह पिता की ही तरह अच्छे स्वभाव का था। दूसरों से उसका व्यवहार भी बहुत ही अच्छा होता था। लोग उसके अच्छे स्वभाव की प्रशंसा करते थे।

उसी गांव में राजीव नामक एक किसान रहता था। उसके बेटे का नाम सोमदेव था। वह शरारती था, पर पढ़ाई में बड़ी ही दिलचस्पी दिखाता था। इसलिए राजीव अपने बेटे को गांव ही में रहनेवाले अध्यापक नारायण त्रिवेदी के यहाँ पढ़ने भेजने लगा।

सोमदेव की ही उम्र का श्रीकांत भी वहाँ पढ़ने आता था। वह सोमदेव से बहुत ही अच्छी तरह से पेश आता था। उसका आदर करता था और मीठे स्वर में उससे बोलता रहता था। पर सोमदेव का व्यवहार इससे बिलकुल ही भिन्न होता था। वह श्रीकांत की परवाह ही नहीं करता था। उसकी हर बात में गर्व छलकता था।

थोड़े समय के अंदर, दोनों ने विद्याभ्यास पूरा किया। श्रीकांत उच्च शिक्षा प्राप्त करने वहाँ से दो कोस की दूरी पर स्थित ज़मींदार की उच्च शिक्षा पाठशाला में जाने लगा। राजीव ने श्रीकांत के
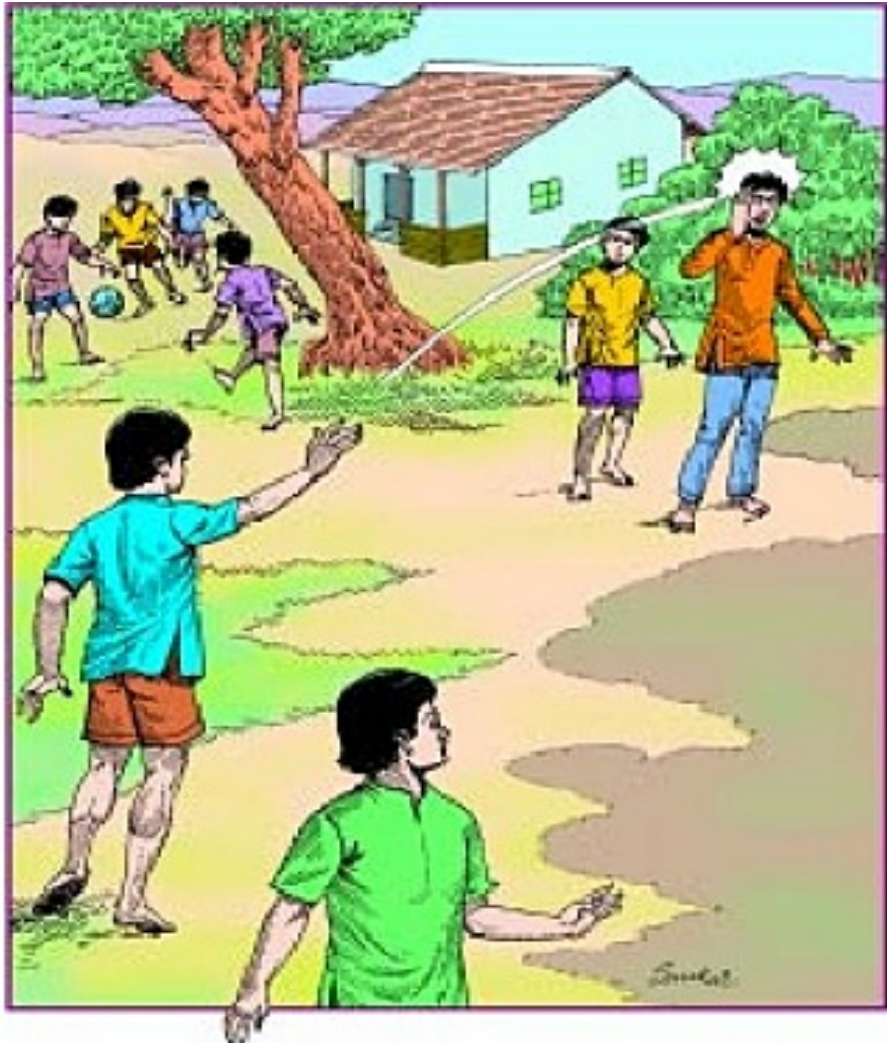
पिता से बात करके उसके बेटे को भी उसी गाड़ी में उसी के साथ भेजने का इंतज़ाम किया।

एक दिन सोमदेव ने, साथ ही पढ़ रहे ज़मींदार के बेटे राजा पर जान-बूझकर पत्थर फेंका। वह पत्थर राजा के सिर को जा लगा और रक्त बहने लगा। यह ख़बर स्कूल भर में आग की तरह फैल गई।

प्रधानाचार्य विष्णु शर्मा ने वैद्य को ख़बर भिजवायी और एक गीले कपड़े को घाव पर रखते हुए पूछा, ''किसने राजा पर पत्थर फेंका? यह बदमाशी किसने की?'' क्रोध भरे स्वर में पूछा।

यह सुनते ही सोमदेव डर के मारे कांपने लगा। इतने में दो-तीन विद्यार्थियों ने सोमदेव को इसके लिए दोषी ठहराया।

यह सुनते ही आश्चर्य में डूबे विष्णु शर्मा ने कहा, ''सोमदेव हमारे श्रीकांत का दोस्त है। भला वह ऐसा काम क्यों करेगा?''

गुरु का कहा सुनकर सोमदेव की आँखों में आँसू आ गये। अब उसे मालूम हो गया कि वह कितना बुरा है और श्रीकांत कितना भला है। उसे अपने बुरे स्वभाव पर पछतावा होने लगा।

विष्णुशर्मा ने सोमदेव की स्थिति देखी और जिन लड़कों ने उसे दोषी ठहराया, उनसे कहा, ''देखा, मैंने डाँटा भी नहीं, सोमदेव को कितना दुख हो रहा है। वह बेचारा ऐसा काम क्यों करेगा? आगे से किसी मासूम पर दोष न लगाना।''

दूसरे ही क्षण राजा ने स्नेह-भरी दृष्टि से सोमदेव को देखते हुए कहा, ''सोमदेव, श्रीकांत का ही नहीं, मेरा भी दोस्त है। वह ऐसी शरारतें करनेवालों में से नहीं है।''

यह सुनकर सोमदेव निश्चेष्ट रह गया। उसके मुंह से एक भी शब्द नहीं निकला। अपने को संभालते हुए वह विष्णु शर्मा के पास पहुँचा और सिर झुकाकर कहने लगा, ''गुरुजी, राजा पर मैंने ही पत्थर फेंका। चूँकि राजा और श्रीकांत अच्छे लड़के हैं, इसलिए वे मुझे निर्दोष कह रहे हैं। मुझे इसकी सज़ा दीजिये।''

सोमनाथ के पश्चात्ताप को देखते हुए विष्णुशर्मा कुछ कहने ही जा रहा था कि इतने में राजा और श्रीकांत ने कहा, ''गुरुजी, हमें मालूम है कि सोमदेव ने ही पत्थर फेंका था। पर हमने देखा कि उसे अपनी ग़लती पर पश्चाताप हो रहा है, इसलिए हमने जान-बूझकर उसे निर्दोष कहा। कृपया उसे सज़ा मत दीजिये।''

विष्णुशर्मा ने दोनों के उदार स्वभाव पर संतुष्ट होते हुए सोमनाथ से कहा, ''देखो, सोमनाथ, अब तुम्हें सज्जनों की संगति प्राप्त हो चुकी है। सचमुच ही तुम भाग्यशाली हो।''

दादी ने यों कहानी समाप्त करते हुए कहा, ''बच्चो, तुम्हें भी मालूम हो गया न कि सज्जन की संगति कितनी महत्वपूर्ण होती है।''

बच्चों ने खुश होते हुए कहा, ''हाँ, हाँ, हम अच्छी तरह से जान गये। आगे से हम भी अच्छे लोगों के साथ ही दोस्ती करेंगे।''

भल्लूक मांत्रिक

15

(कालीवर्मा ने अपने अनुचरों के साथ किले में प्रवेश किया। मायामर्कट ने उन्हें एक कटा सिर दिखाया। वे जान गये कि यह सिर राजा दुर्मुख का नहीं है। वे उसे हर जगह ढूँढ रहे थे। आख़िर उन्होंने दुर्मुख को देख ही लिया, सभास्थल में, जहाँ वह सिंहासन पर आसीन था। दूसरे ही क्षण बधिक भल्लूक हाथी से कूद पड़ा और परशु लेकर सभास्थल के अंदर तेजी से प्रवेश किया। उसके बाद...)

बधिक भल्लूक के अंदर आते ही कालीवर्मा ने भांप लिया कि कोई दुर्घटना घटनेवाली है। उसने हाथी पर बैठे जंगली से कहा, ''अरे ओ जंगली, तुरंत जाओ और भल्लूक को रोको, जो राजा दुर्मुख का सिर काटने जा रहा है।'' फिर उसने ऊँचे स्वर में कहा, ''ऐ बधिक भल्लूक, रुक जाना। मैं आ रहा हूँ। राजा को मारना मत।''

कालीवर्मा की आज्ञा सुनते ही, जंगली हाथी पर से कूद पड़ा और बधिक भल्लूक को रोकने के उद्देश्य से उसके सामने खड़ा हो गया और बोला, ''भल्लूकजी, जल्दबाजी मत कीजिये। कालीवर्मा कह रहे हैं कि राजा का सिर काटा न जाए।''

बधिक भल्लूक ने क्रोध में कहा, ''भल्लूक मांत्रिक ने मुझे इसका सिर काटकर ले आने की आज्ञा दी है। अगर मैं उनकी आज्ञा का पालन नहीं करूँ तो वे मुझे रीछ बना डालेंगे।''

इतने में कालीवर्मा ने वहाँ पहुँचकर सिंहासन पर बिना हिले-डुले बैठे राजा दुर्मुख को देखा और

कहा, ''इस राजा को क्या हो गया? आँखें बंद करके यह निश्चेष्ट क्यों बैठा हुआ है?''

बधिक भल्लूक ने परशु अपने कंधे पर रखते हुए कहा, ''स्वामी कालीबर्मा, कहिये, आपकी क्या आज्ञा है?''

कालीबर्मा, दुर्मुख के निकट आया। उसने उसे ग़ौर से देखा और कहा, ''भल्लूक, लगता है कि तुम्हें इसका सिर काटना नहीं पड़ेगा, क्योंकि यह मर चुका है। ऐसा क्यों हुआ होगा? परशु के साथ तुम्हें अपनी तरफ़ आते हुए देखकर कहीं भय के मारे इसका दिल रुक तो नहीं गया?''

''बधिक भल्लूक ने, क्या दुर्मुख का सिर काट डाला?'' कहता हुआ भल्लूक मांत्रिक अंदर आया। उसने सिंहासन पर निश्चेष्ट बैठे राजा को देखा और कहा, ''बेचारा! लगता है कि प्राण भीति से बेहोश हो गया।'' फिर अपनी तलवार को उसके कंधे से स्पर्श कराते हुए कहा, ''राजा दुर्मुख, होश में आ जाओ। भयभीत होने की कोई बात नहीं। मैं तुम्हें आश्वासन देता हूँ।''

दुर्मुख ने तुरंत आँखें खोलीं और अपने हाथों से सिर को छूते हुए कहा, ''वाह, मेरा सिर कितना मजबूत है। बधिक भल्लूक ने परशु चलाया, फिर भी यह तो जैसे का तैसा है।''

उसकी बातों पर सब लोग हँस पड़े। दुर्मुख ने सिंहासन पर से उठते हुए कहा, ''कालीबर्मा, मांत्रिक आदि सबके सब यहीं मौजूद हैं। एक और बार सिंहासन पर आसीन होने की मेरी प्रबल इच्छा है। फिर मेरा सिर कट भी जाए, मुझे कोई चिंता नहीं होगी।''

कालीबर्मा ने, दुर्मुख के कंधों को पकड़कर उसे सिंहासन पर बिठाया और कहा, ''राजा दुर्मुख, तुम अब हमारे मित्र हो। जो हुआ, सब भूल जाओ। जिस सामंत सूर्यभूपति ने तुम्हारे किले को अपने अधीन किया और वह माया मर्कट, जिसने मेरे गुरु भल्लूक मांत्रिक के मंत्र दंड का अपहरण किया, दोनों एक हो गये हैं। पहले हमें उन्हें पकड़ना होगा।''

कालीबर्मा के यों कहते ही राजा दुर्मुख खुशी से फूल उठा। बड़ी ही तेज़ी से वह सिंहासन से उतरकर सभा के बीचों बीच आ गया और खड्ग उठाते हुए ऊँचे स्वर में कहने लगा, ''सुनो, उदयगिरि का राजा मैं आज्ञा दे रहा हूँ। विश्वासपात्र सब सैनिक यहाँ आ जाएँ। जो नहीं

आयेंगे, वे राजद्रोही ठहराये जायेंगे और उनके सिर काट दिये जायेंगे।''

दूसरे ही क्षण किले के सब कोनों से सैनिक वहाँ आने लगे। कालीवर्मा ने उनकी संख्या गिनी और राजा दुर्मुख से कहा, ''दुर्मुख, तुम्हारे सैनिक कुल मिलाकर चालीस से अधिक नहीं हैं। उदयगिरि के राजा होकर इतने ही सैनिक?''

अपमान से राजा दुर्मुख ने सिर झुकाकर कहा, ''कालीवर्मा, लगता है कि सूर्यभूपति ने धन का लालच देकर मेरे सब सैनिकों को अपने अधीन कर लिया। पहले हमें उस द्रोही को ढूँढ़कर पकड़ना होगा।''

कालीवर्मा ने भल्लूक मांत्रिक से पूछा, ''गुरु, अब आप क्या आज्ञा देते हैं?'' भल्लूक मांत्रिक सभा मंडप की भित्ति से सटकर खड़ा था और वह किले की दीवारों को गौर से देख रहा था। उसे अपने मंत्रदण्ड के खो जाने की बड़ी चिन्ता थी। अलावा इसके वह सोचने लगा कि अगर वह इन प्रदेशों को छोड़कर चला जाए तो राजा दुर्मुख शत्रुओं के हाथों में फंस जायेगा और नाना कष्ट झेलेगा। हो सकता है, अब की परिस्थितियों में कालीवर्मा भी उसके गुरु भल्लूकपाद के पास आने से इनकार कर दे।

भल्लूक मांत्रिक ने यों सोचते हुए कालीवर्मा से कहा, ''शिष्य काली, मेरी आज्ञाओं की बात छोड़। बताना कि तुम क्या करना चाहते हो?''

कालीवर्मा ने जवाब में कहा, ''गुरु, यह भी कोई सवाल है? एक बार आपने इच्छा प्रकट की कि मैं आपके गुरु के निवासस्थल भल्लूकपाद पर्वतों में आऊँ। क्या यह आप भूल गये?''
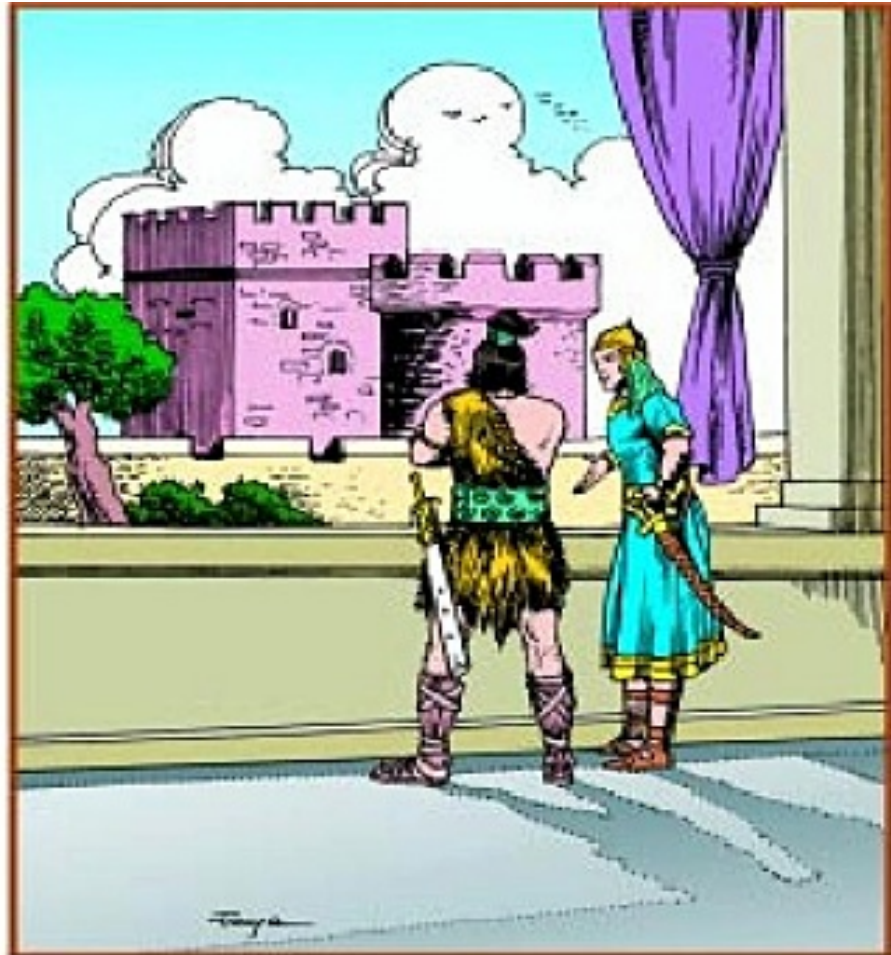
उसके इस जवाब से खुश होकर भल्लूक मांत्रिक ने कहा, ''शिष्य काली, तुम्हारी गुरु भक्ति प्रशंसनीय है। मेरे गुरुवर भल्लूकपाद एक तांत्रिक के कारण आजकल जटिल समस्याओं का सामना कर रहे हैं। वे आपत्तियों में फंसे हुए हैं। उन्हें तुम जैसे साहसी व पराक्रमी की सहायता की ज़रूरत है। उसके प्रतिफल में तुमको क्या चाहिये, निस्संकोच कह देना।''

कालीवर्मा ने क्षण भर तक सोचकर कहा, ''गुरु, प्रतिफलों के बारे में बाद में बात करेंगे। राजा जितकेतु ने जब मेरे शिरच्छेद की सज़ा सुनायी, तब दिरिशन बन में आपने मेरी बड़ी सहायता की। तब आपकी हर प्रकार की

सहायता करने का बचन दे चुका हूँ। अब मुझे क्या करना है, आज्ञा दीजिये।''

''तो फिर तुम्हें मेरे साथ ब्रह्मपुत्र नदी के जन्मस्थान में स्थित भल्लूक पर्वतों में आना होगा।'' भल्लूक मांत्रिक ने कहा।

''आपकी आज्ञा शिरोधार्य है। तो चलिये'' कहते हुआ काली बर्मा निकल पड़ा।

राजा दुर्मुख ने थरथर कांपते हुए कहा, ''मांत्रिक प्रभु, लगता है, आपने मेरी बात भुला दी। इतने कम सैनिकों को लेकर शासक बने रहना मेरे लिए असंभव है। मैं भी आपके साथ भल्लूक पर्वत आ जाऊँगा।''

भल्लूक मांत्रिक कुछ कहने ही वाला था, बधिक भल्लूक ने परशु ज़मीन पर पटक दिया और रुआंसे स्वर में कहने लगा, ''साहब, आप मुझे भूल ही गये। आप सबके चले जाने के बाद मेरे पुराने मालिक जितकेतु राजा, आज्ञा के उलंघन के अपराध में मुझे कड़ी से कडी सज़ा देंगे। मुझे भी कृपया अपने साथ ले जाइये।''

भल्लूक मांत्रिक मंदहास करते हुए बधिक भल्लूक के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, ''भल्लूक, डरो मत। यह मत समझना कि मैंने तुम्हारी और राजा दुर्मुख की बात भुला दी। तुम दोनों के क्षेम के प्रबंध के बाद ही यहाँ से जाऊँगा। चंद्रशिला नगर के राजा जितकेतु ने कालीबर्मा का और मेरा भी अपमान किया। हमें उस नगर में जाना है और उसका अंत करना है।''

''उस घमंडी राजा का मंत्री जीवगुप्त कुछ सैनिकों को लिये किले के बाहर पहरा दे रहा है। वह हम पर अचानक हमला न कर बैठे, इसके लिए राक्षस उग्रदंड आवश्यक सावधानी बरत रहा है और उसको रोकने के काम में लगा हुआ है। अब हमें इसकी जानकारी नहीं है कि सामंत सूर्यभूपति और माया मर्कट किले के किस कोने में छिपे हुए हैं।'' कालीबर्मा ने कहा।

कालीबर्मा के यों कहते ही बधिक भल्लूक ने परशु अपनी भुजा पर रख लिया और कहा, ''स्वामी कालीबर्मा, मैं हाथी पर सवार होकर पहले किले के बाहर जाऊँगा और वहाँ की स्थिति देख आऊँगा। राक्षस उग्रदंड का साथ देने जब मैं वहाँ जाऊँगा तब हो सकता है, वह मंत्री और सैनिक चंद्रशिला नगर की ओर दुम दबाकर भाग जाएँ।''

''ठीक है, तुम्हारा वहाँ जाना ठीक ही होगा।

हम भी यहाँ उस सामंत व माया मर्कट को ढूँढ़ने के काम में लग जायेंगे और फिर यहीं लौटेंगे।'' कालीवर्मा ने कहा।

''अरे ऐ जंगली, हाथी इसी तरफ़ ज़रा आगे ले आना,'' बधिक भल्लूक ने जंगली को संबोधित करते हुए कहा।

हाथी के वहाँ पहुँचते ही बधिक भल्लूक उसपर सवार हो गया। तब तक मौन हो ध्यानपूर्वक सुनते हुए राजा दुर्मुख ने, भल्लूक मांत्रिक से कहा, ''मांत्रिक प्रभु, इतने कम सैनिकों के साथ किले में मेरा रहना उचित नहीं है। शत्रु किसी भी क्षण मुझपर टूट पड़ सकते हैं। मैं भी आपके साथ चंद्रशिला नगर आऊँगा।''

इसके बाद सबके सब सभास्थल से नीचे आये। फिर उन्होंने सैनिकों को आज्ञा दी कि वे सामंत और मायामर्कट की खोज में निकल पड़ें। इतने में किले की दीवारों पर खड़े राजा दुर्मुख के अंगरक्षक मुक्तकंठ से चिल्लाने लगे, ''महाराज, हमारा सामंत, माया मर्कट, जितकेतु राजा के साथ-साथ खड़े हैं। वे राक्षस से बातें करने में लगे हुए हैं।''

''गुरु, मुझे पहले ही से यह संदेह था कि ऐसा ही कुछ होनेवाला है। जले द्वारों के पास हमें कुछ सैनिकों को तैनात करना था। वे दुष्ट शायद राक्षस उग्रदंड को अपने पक्ष में लेने का प्रयत्न कर रहे हैं।'' कालीवर्मा ने अपना संदेह व्यक्त किया।

''काली, उनके प्रयत्न कदापि सफल नहीं होंगे। वह राक्षस मुझसे कोई बड़ी सहायता चाहता है, इसलिए वह उनके पक्ष में नहीं जायेगा। अब चलिये।'' भल्लूक मांत्रिक ने कहा।

कालीवर्मा का संदेह ठीक ही था। राजा जितकेतु का मंत्री जीवगुप्त, उग्रदंड को अपने पक्ष में लेने की भरसक कोशिश करने लगा। उसने उसे तरह-तरह के बड़े-बड़े प्रलोभन दिये। भ्रांतिमति भी, जो माया मर्कट के रूप में है, उसका साथ देता गया और वही राग आलापने लगा।

राक्षस उग्रदंड ने पत्थर की गदा ऊपर उठाते हुए कहा, ''मुझे तुममें से किसी की भी सहायता नहीं चाहिये। भल्लूकपाद पर्वतों में मेरा एक बंधु बंदी है। उसे मुक्त करना है। यही मेरा एक मात्र ध्येय है।''

उसकी इन बातों पर मायामर्कट ने उसका उपहास करते हुए कहा, ''उग्रदंड, वह बंधु और

कौन है? तुम्हारा अग्रज ही तो है। छूटने का सवाल ही नहीं उठता। मेरे गुरु तांत्रिक मिथ्या मिश्र ने बहुत पहले ही उसे ज़मीन में गाड़ दिया। चुपचाप जितकेतु राजा के आश्रय में रहो और सुखी जीवन गुज़ारो। यही तुम्हारे लिए श्रेयस्कर होगा।''

''उस तांत्रिक ने मेरे बड़े भाई को सचमुच मार ड़ाला? या तुम झूठ बोल रहे हो?'' कहते हुए उग्रदंड ने अपने दांत पीसे।

मायामर्कट कुछ कहने ही जा रहा था कि, मंत्री जीवगुप्त ने उसे रोकते हुए कहा, ''उग्रदंड, अच्छा इसी में है कि जो हुआ, भूल जाओ। तुम हमारे साथ रहोगे तो हम इस बात पर गर्व करते रहेंगे कि हमारे राज्य में भी एक बलशाली राक्षस है। साथ ही तुम हमारे राजा की ठंडी साया में आराम से ज़िन्दगी काट सकते हो।''

''तो आपके कहने का यह मतलब है कि मुझसे किसी भी प्रकार की सहायता की प्रत्याशा किये बिना, तुम्हारे राजा मेरा आतिथ्य करेंगे। है न?'' उग्रदंड ने कहा।

''तुमसे एक ही सहायता चाहिये। हम अब किले में प्रवेश करने जा रहे हैं। वहाँ भल्लूक मांत्रिक और कालीवर्मा नामक दो अपराधी हैं। वहीं राजा दुर्मुख भी है। बस, इन तीनों का सर्वनाश करने में हमारी सहायता करो। बस, इतनी -सी सहायता हम तुमसे चाहते हैं।'' मंत्री जीवगुप्त ने कहा।

उग्रदंड इसका जवाब देने ही वाला था कि इतने में भैंसे पर सवार भल्लूक मांत्रिक सहित सबके सब एक साथ किले से बाहर आये। उन्हें देखकर मंत्री भयभीत हो गया और सोच में पड़ गया कि क्या करूँ। उसने तुरंत घोड़ों पर सवार सामंत और माया मर्कट की ओर देखा।

राक्षस उग्रदंड ने जोर से हुंकारते हुए कहा, ''मंत्री, तुम मुझसे सहायता चाहते हो न? लो, मेरी यह सहायता तुम्हें और दुष्टों को।'' कहते हुए उसने पत्थर की गदा ऊपर उठायी और मायामर्कट पर फेंकी।

मायामर्कट किचकिचाता हुआ घोड़े पर से ऊपर उड़ा। उग्रदंड की गदा घोड़े के सिर को जा लगी। ***(और है)***

वेताल कथाएँ

राजा-चोर

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः उस प्राचीन वृक्ष के पास गया। वृक्ष पर से शव को उतारा। उसे अपने कंधे पर डाल लिया और यथावत् श्मशान की ओर अग्रसर होने लगा। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, ''राजन्, तुम्हारा कठोर परिश्रम देखते हुए अत्यंत आश्चर्य होता है। मुझे लगता है कि किसी के हाथों तुम्हारा अप्रत्याशित अपमान हुआ है और उस अपमान से अपने को बचाने या उसे छिपाने की कोशिश में लगे हुए हो। हम देखते आ रहे हैं कि मनुष्य अच्छा करने के उद्देश्य से कोई काम हाथ में लेता है। पर परिस्थितियाँ उसे साथ नहीं देतीं। उल्टे उस काम से उसे हानि पहुँचती है। वह यह नहीं चाहता कि किसी दूसरों को

यह मालूम हो, क्योंकि वह जगहँसाई से बहुत डरता है। इसके लिए वह आवश्यकता से अधिक सावधानी बरतता है। सामान्य मनुष्यों की अपेक्षा यह प्रवृत्ति समाज में बड़े माने जानेवाले लोगों में अधिकाधिक पायी जाती है। उदाहरणस्वरूप राजा सुनील की कहानी तुम्हें सुनाने जा रहा हूँ, जो एक चोर से ठगा गया। वह यह नहीं चाहता था कि यह विषय किसी और को मालूम हो। इसलिए जब चोर पकड़ा गया तब उसने उसे दंड नहीं दिया, उल्टे उसे माफ़ कर दिया। राजा होकर उसे ऐसा करना नहीं चाहिये था। उस राजा सुनील की कहानी अपनी थकावट दूर करते हुए ध्यानपूर्वक सुनो।'' फिर बेताल राजा सुनील की कहानी यों सुनाने लगाः

राजा सुधीरवर्मा का पुत्र सुनील, दयानंद मुनि के गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त कर रहा था। उसने बहुत ही जल्दी सभी विद्याओं में भरपूर ज्ञान प्राप्त किया। एक दिन सुनील को बुलवाकर दयानंद मुनि ने उससे कहा, ''तुमने विद्यार्जन के प्रति पर्याप्त आसक्ति दर्शायी और निरंतर परिश्रम किया। इसके कारण कम समय में ही सब विद्याओं में पारंगत हो पाये। अब तुम्हें गुरुकुल में रहकर और शिक्षा प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं है। हर मानव के लिए विद्या नयनद्वय की तरह है। शासनकाल में यह तुम्हारे लिए इतोधिक उपयोगी सिद्ध होगी। अधिकारीगण विवेकपूर्ण निर्णय लेते हैं, जिनसे लोग बहुत बड़ी संख्या में लाभ उठाते हैं। अतः शासकों के लिए विद्या बहुत आवश्यक व उपयोगी है। समस्त विद्याओं का ही परमार्थ नहीं बल्कि मानव जन्म का भी परमार्थ है, परोपकार। इस परम सत्य को सपने में भी न भुलाना। वही मेरे लिए सच्ची गुरुदक्षिणा होगी।'' कहते हुए मुनि ने सुनील को आशीर्वाद दिया।

सुनील ने भक्तिपूर्वक गुरु को प्रणाम किया। गुरुकुल की समग्र वृद्धि के लिए पिता ने जो भेंट भेजी उसे गुरु समर्पित किया और राजधानी निकल पड़ा।

विद्या शोभा से सुशोभित पूर्णचंद्र की तरह लौटे अपने पुत्र को देखकर राजा सुधीर वर्मा बहुत आनंदित हुए। मंत्रियों व राजगुरु से परामर्श करने के बाद उन्होंने अपने पुत्र का राज्याभिषेक वैभवपूर्वक किया।

पिता के सुयोग्य पुत्र की तरह सुनील ने बड़ी

ही दक्षता के साथ शासन चलाया। गुरुकुल से निकलते समय गुरु ने जो बातें कहीं, वे सदा उसके कानों में गूँजती रहीं। इसलिए वह अक्सर बहुरूपिया बनकर देश में घूमता रहता था और प्रजा की समस्याओं से स्वयं परिचित होता था। वह इन समस्याओं के समाधान भी ढूँढ़ निकालता था। विपत्तियों में फंसे लोगों की सहायता करने में उसे अपार आनंद मिलता था।

एक दिन वह वस्त्र व्यापारी के वेष में देश में घूमने निकला। राजधानी से थोड़ी ही दूरी पर प्रवाहित हो रही नदी के उस पार के अरण्य प्रदेश में जब वह एक गाँव के निकट पहुँच रहा था तब उसे अकस्मात् एक आर्तनाद सुनायी पड़ा, "मेरे बच्चे को बचाइये, मेरे बच्चे को बचाइये"। उस आर्तनाद को सुनकर वह मुड़ा।

मुड़ने पर उसने देखा कि एक आदमी एक उजड़े कुएँ के बाहर खड़ा है और गिडगिडा रहा है, "महाशय, मेरा बेटा कुएँ में गिर गया। मैं अपाहिज हूँ। कुएँ में उतर नहीं सकता। मेरे बेटे को बचाइये। कृपया बचा लीजिये।" दीन स्वर में गिडगिडाने लगा।

बहुरूपये सुनील ने कपडों की गठरी ज़मीन पर रख दी और कुएँ के अंदर झांकते हुए उसमें कूद पड़ा। उसने पूरा कुआँ ढूँढ़ डाला, बहुत देर तक। पर बच्चा दिखायी नहीं पड़ा। जब वह कुएँ से बाहर आया तो वहाँ न ही वह अपाहिज था और न ही उसके कपड़ों की गठरी थी। राजा को अब यह समझने में देर नहीं लगी कि उसके साथ
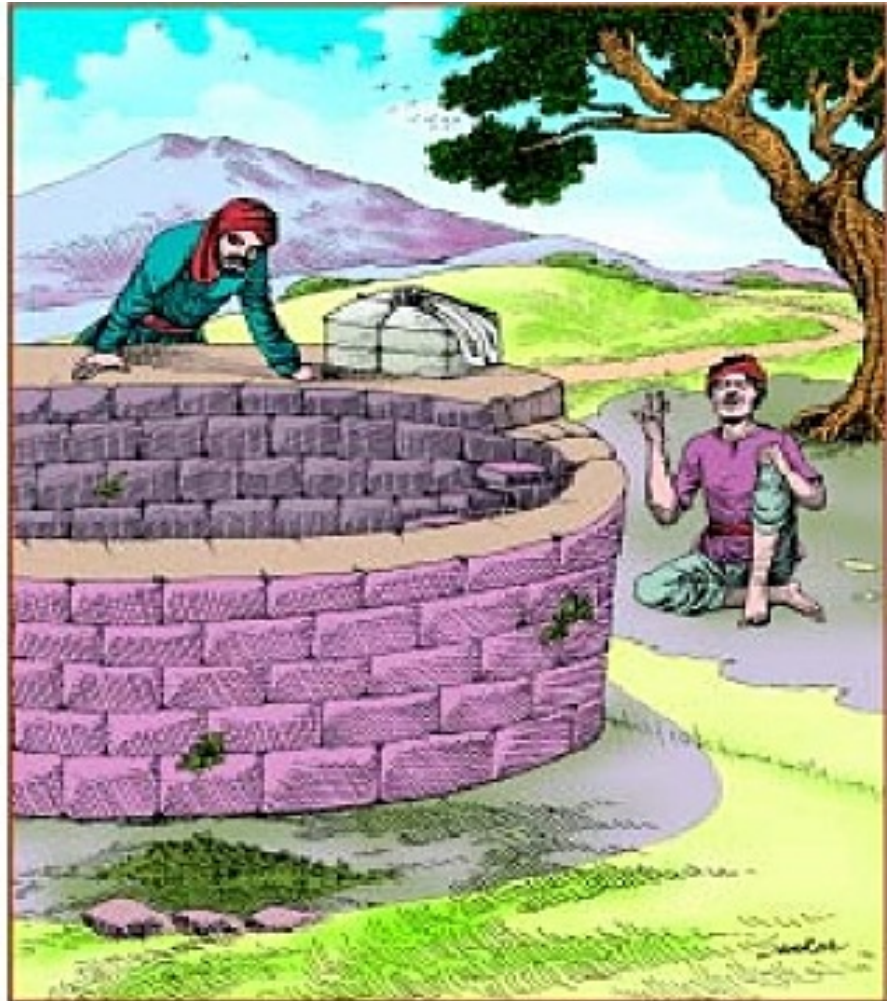
धोखा हुआ है। वह उदास होकर राजधानी लौटा।

दस दिन बीत गये। ग्यारहवें दिन जब राजा सुनील दरबार में सिंहासन पर आसीन था तब सैनिक एक चोर को वहाँ ले आये, जिसके हाथों में हथकड़ियाँ लगी थीं।

राजा ने उसे ग़ौर से देखा। सैनिकों से उसने पूछा कि इसने क्या अपराध किया?

"प्रभु, आभूषणों के व्यापारी पुण्यगुप्त के घर में सेंध लगाते समय यह पकड़ा गया।" सैनिकों ने कहा।

थोड़ी देर तक सोचने के बाद राजा ने कहा, "ठीक है, आज रात तक उसे जेल में ही रखना। कल सज़ा सुनाऊँगा।"

सैनिक उसे खींचते हुए ले गये और जेल में बंद कर दिया।

उस दिन आधी रात को राजा वस्त्र व्यापारी के वेष में जेल के अंदर गये। और सोते हुए चोर को जगाया।

चोर घबराता हुआ जागा और व्यापारी को देखकर आश्चर्य भरे स्वर में पूछा, ''तुम यहाँ कैसे आये? क्या तुम भी चोर हो?''

राजा ने अपनी दाढ़ी निकाली, पगड़ी उतारी तो चोर उसे देखकर हक्का-बक्का रह गया। वह भय के मारे थरथर कांपते हुए कहने लगा, ''क्षमा कीजिये, प्रभु! आपको चकमा देकर आपके कपड़ों की गठरी चुरा ली। भविष्य में कभी भी ऐसा काम नहीं करूँगा। मेरी रक्षा कीजिये।'' कहता हुआ वह राजा के पैरों पर गिर पड़ा।

''अपराधी को दंड भुगतना ही पड़ेगा। व्यापारी के घर में सेंध लगाकर तुमने अपराध किया और इस अपराध के लिए तुम्हें दंड भुगतना ही होगा। मुझे धोखा दिया है, इस अपराध के लिए मैं तुम्हें कोई सजा नहीं दूँगा। परंतु हाँ, वादा करो कि कुएँ के बाहर जो घटना घटी, उसके बारे में तुम किसी से कुछ नहीं कहोगे। मेरी शर्त तुम्हें मंजूर है?'' राजा ने पूछा।

''हाँ, ऐसा ही करूँगा प्रभु।'' कहते हुए चोर ने राजा के पैरों का स्पर्श किया। राजा जेल के बाहर आया।

दूसरे दिन, सैनिक चोर को राजा के सामने ले आये। सभासद् राजा का फैसला सुनने के लिए उत्कंठित थे।

राजा ने चोर से पूछा, ''आभूषणों के व्यापारी पुण्यगुप्त के घर में तुमने सेंध लगायी?''

''हाँ प्रभु'', चोर ने सिर झुकाकर कहा।

''क्या यह तुम्हारी पहली चोरी है या चोरी करना ही तुम्हारा पेशा है? राजा ने पूछा।

''चोरी करना मेरा पेशा नहीं है प्रभु। जैसे ही पढ़ाई पूरी हुई, दुर्भाग्यवश मुझपर चोरी का इलजाम मढा गया। जिसे मैंने नहीं की थी। मुझे सज़ा भी दी गयी। मुझपर चोर की छाप लग गयी। जीविका के लिए बहुत घूमा-फिरा। मुझे चोर समझकर कोई भी मुझे काम देने के लिए तैयार नहीं था। मैं जीना नहीं चाहता था। जीवन से मुझे विरक्ति हो गयी। मरने के लिए जंगल गया। पर मरने का साहस मुझमें नहीं था। भूख से तडपता हुआ एक कुएँ के किनारे बैठा रहा। तभी वहाँ आये एक पुण्यात्मा के कपडों की और आहार पदार्थों से

भरी गठरी की चोरी चालाकी से की। उन आहार पदार्थों को खाकर पेट भर लिया। तब से मुझे लगने लगा कि चोरी करके आराम से जिन्दगी काट सकूँगा। मुझे लगा कि यह कोई ज़रूरी नहीं है कि ज़िन्दगी गुजारने के लिए काम किया जाए। उस दिन ले लेकर मैं छोटी-मोटी चोरियाँ करने लगा। कल ब्यापारी के घर में सेंघ लगाते हुए पकड़ा गया।'' आंसू बहाते हुए चोर ने बताया।

''अगर तुम्हें जीने का कोई रास्ता मिल जाए तो क्या चोरियाँ करना छोड़ दोगे?'' राजा ने पूछा।

''जन्म भर चोरियाँ करूँगा ही नहीं प्रभु'', आंसू पोंछते हुए चोर ने कहा। ''इन दस दिनों में तुमने जिन-जिन लोगों की भी जो चोरी की, उन्हें उनको लौटा दो और उनसे माफ़ी मांगो। तब तक सैनिक तुम्हारे ही साथ रहेंगे। इसके बाद किसी रोज़गार का इंतज़ाम मैं कर दूँगा।'' राजा ने आश्वासन दिया।

उस फैसले को सुनकर सभी सभासदों ने तालियाँ बजायीं।

''आपकी आज्ञा शिरोधार्य है प्रभु,'' कहता हुआ चोर सैनिकों के पीछे-पीछे गया।

राजा सुनील ने गुरु की बातों का स्मरण करते हुए तृप्ति के साथ सिर हिलाया।

बेताल ने कहानी समाप्त की और राजा से पूछा, ''राजन्, एक तरफ़ राजा कहते रहे कि अपराधी को अवश्य दंड मिलना चाहिये और दूसरी तरफ़ चोर के अपराध को माफ़ कर दिया। यह क्या आपको अस्वाभाविक व विचित्र नहीं लगता? क्या इससे यह साफ़ नहीं हो जाता कि अगर चोर असली राज़ खोल दे तो अपमानित होने के भय से राजा ने उस धोखेबाज़ चोर को

माफ़ कर दिया और उसे रोज़गार दिलाने का आश्वासन भी दिया।

"जिस चोर के हाथों राजा खुद ठगा गया, उसे माफ़ करना क्या न्यायसंगत है? क्या यह न्याय व धर्म कहलायेगा? इससे क्या देश में अपराधों की संख्या में तीव्र वृद्धि नहीं होगी? मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े -टुकड़े हो जायेंगे।''

राजा विक्रमार्क ने कहा, "जो अपराधी है, उसे निस्संदेह दंड भुगतना ही पड़ेगा। परंतु हमें इस तथ्य को भुलाना नहीं चाहिये कि दंड का उद्देश्य अपराधी में परिवर्तन ले आना है। हमें मालूम हो जाता है कि जेल में चोर ने राजा को पहचाना, उसमें परिवर्तन का क्रम शुरू हो गया। चोर होते हुए भी उसने जो भी कहा, राजा ने उसका विश्वास किया, क्योंकि चोर को अपनी ग़लतियों पर पछतावा होने लगा। उसमें अपने को सुधारने की तीव्र इच्छा जगने लगी। राजा का यह कर्तव्य बनता है कि चोरी के मूल कारणों को वह जाने और उन कारणों को मिटा दे,जिससे चोर को चोरी करने का अवसर ही नहीं मिले। इसी सत्य को दृष्टि में रखते हुए आदर्श शासक सुनील ने चोर को सुधरने का मौक़ा दिया। अब रही, राजा के चोर से ठगे जाने की बात को राज़ ही रखने की बात। उन्होंने इस डर से चोर से यह नहीं कहा कि इससे उसकी जगहँसाई होगी या उसका अपमान होगा, निरादर होगा। वे चाहते थे कि परोपकार के बारे में गुरु ने जो कहा, उसका पूरा-पूरा पालन वे केवल स्वयं ही न करें बल्कि उनके देश के नागरिक भी करें। इसके पीछे उनका आशय यही था। ऐसी स्थिति में राजा का स्वयं परोपकार करते हुए ठगे जाने की बात लोगों को मालूम हो जाए तो जनता में परोपकार के प्रति विश्वास नहीं रह जायेगा। ऐसी स्थिति उत्पन्न न हो, इसी उदात्त आशय से प्रेरित होकर राजा ने चोर के सामने शर्त रखी कि वह उस विषय को गुप्त ही रखे।''

राजा के मौन-भंग में सफल बेताल शव सहित ग़ायब होकर फिर से पेड़ पर जा बैठा ।

(आधार 'मंजु भारती' की रचना)

रामायण ३०० भाषान्तरों में

सभी भारतीय भाषाओं में, तुलु तथा भीली, संथाली आदिबासी भाषाओं को सम्मिलित कर, सुप्रसिद्ध महाकाव्य रामायण के, बहुविध भाषान्तर मिलते हैं। केवल संस्कृत में ही २५ भिन्न-भिन्न भाषान्तर हैं। हमारा महाकाव्य दक्षिण-पूर्वी पड़ोसी देशों में कितना लोकप्रिय है वह अन्नामिज, बालिनिज, कम्बोडियन, चीनी, जाबानिज, लाबोशियन, मलाई, थाई तथा तिब्बती भाषान्तरों से देखा जा सकता है। निस्सन्देह कुछ भाषान्तर सभी यूरोपीय भाषाओं में उपलब्ध हैं। एक विख्यात इतिहासकार ने टिप्पणी की है कि रामायण का सम्बन्ध इतिहास के किसी एक मुहूर्त्त से नहीं है; इसका अपना इतिहास है जो भिन्न-भिन्न कालों और स्थानों पर कथानक के चारों ओर बुने हुए भाषान्तरों में सन्निहित है।

स्टेशन को परम्परा का स्थान

मुम्बई में छत्रपति शिवा जी टरमिनस को बर्ल्ड हेरिटेज का स्थान दिया गया है। भारत के एक दूसरे रेलवे स्टेशन प.बंगाल में दार्जिलिंग को भी यह दर्जा प्राप्त है। कहा जाता है कि छत्रपति शिवा जी टरमिनस विश्व का व्यस्ततम रेलवे स्टेशन है। इसका निर्माण सन् १८७८ में आरम्भ हुआ और दस बर्षों में पूरा हुआ। रानी विक्टोरिया की स्मृति में इसे विक्टोरिया टरमिनस का नाम दिया गया। सन् १९२९ में १३ प्लैटफार्म और बढ़ाये गये। सन् १९९६ में २ और की बृद्धि की गई तथा नाम बदल दिया गया। यहाँ ३० लाख यात्री हर रोज आते हैं।

अन्य देशों (जापान) की जनश्रुत कथाएँ

इस प्रकार समुद्र ख़ारा हो गया

बहुत बहुत पहले एक अरण्य के निकट एक गाँव में दो मित्र रहते थे - सुजु और यामर। सुजु बलिष्ठ और फुरतीला था। यामर कमजोर तो नहीं था, पर सुस्त था। किसी ऊँचे पेड़ पर पके फल नजर आ जाते तो सुजु ही उन्हें तोड़ता। लेकिन यामर को कहता कि तू अपनी पसन्द का फल पहले ले ले।

वे दोनों बड़े हो गये। दोनों के विवाह हो गये।

सुजु एक छोटे से घर में रहता था और कड़ी मेहनत से दो रोटी कमा पाता था। पर यामर आराम से जिन्दगी गुजार रहा था, क्योंकि उसके पिता कुछ एकड़ जमीन छोड़ गये थे।

फिर भी सुजु और यामर की दोस्ती बनी रही। जब भी दोनों के पास समय होता तो वे जंगल में चले जाते। यह दोनों की आदत-सी हो गई थी। एक दिन वे एक गुफा के अन्दर चले गये। सुजु की नज़र कुछ छोटे-छोटे पत्थरों पर पड़ी जो अन्धेरे में चमक रहे थे। उसने उन्हें उठा लिया। जब दोनों बाहर आये तब उसने उन्हें यामर को दिखाया। यामर ने उन्हें ध्यान से देखा-परखा। उसकी आँखों में चमक आ गई। लेकिन उसने लापरवाही से कहा, ''कल मैं शहर जाकर पता करूँगा कि ये किसी मूल्य के हैं?''

अगले दिन यामर शहर गया। उसका अनुमान ठीक निकला। वे मूल्यवान रत्न थे। उसने उन्हें बेच दिया। उनके बदले में उसे इतना काफी धन मिल गया कि धनी लोगों में उसका शुमार होने लगा। सुजु को उसने कुछ सिक्के देते हुए कहा, ''वे लगभग मूल्यहीन थे। फिर भी, एक अमीर ने अपना फूलदान सजाने के लिए उन्हें खरीद लिया। मूल्य का आधा यह रहा, तुम्हारे लिए।''

यामर ने एक सुन्दर भवन का निर्माण किया, कुछ घोड़े खरीदे और अनेक नौकरों को बहाल किया। ''संयोग से मेरे पुरखों के घर में गड़ा हुआ धन मिल गया।'' उसने पड़ोसियों से कहा।

सुजु इस बात से बहुत खुश था कि उसका मित्र धनी हो गया है। ''जरूरत पड़ने पर आखिर उससे मदद ले सकता हूँ!'' उसने पत्नी से कहा। उसकी

पत्नी को सन्देह था। उसे यह भी शक हुआ कि यामर की अमीरी का कारण वे रत्न ही थे जो सुजु को गुफा में मिले थे।

एक दिन सुजु अकेला ही गुफा की तरफ चला गया। उसे अपने बच्चे की दवा के लिए कुछ पैसों की सख्त जरूरत थी। वहाँ पहुँचने पर उसने यामर को गुफा में प्रवेश करते देखा। "यहाँ क्या कर रहे हो?" सुजु ने पूछा।

भौचक-सा होकर यामर ने बुदबुदाते हुए कहा कि वह यों ही इधर से गुजरता हुआ बिना किसी खास वजह के गुफा के अन्दर चला गया। "लेकिन तुम इधर कैसे आये?" यामर ने भी पूछा। "ओह, मैं तो कुछ और पत्थरों को देखने आया था।" सुजु ने सच-सच बता दिया।

"बहुत अच्छा! चलो, साथ-साथ खोजते हैं। यदि कुछ और मिल गया, मैं फिर उन्हें शहर ले जाऊँगा। तुम बड़े भोले हो, तुम्हें कोई उनका अच्छा दाम नहीं देगा।" यामर ने कहा। उन दोनों ने चट्टानों के नीचे सब जगह देखा पर कुछ न मिला।

वे गुफा से बाहर आये और घर की ओर चल पड़े। "बारिश आ सकती है। जल्दी चलो।"यामर यह बोल कर सुजु से अधिक तेज चलने लगा।

"बेटे, क्या लकड़ी के इस गट्ठर को उठा कर मेरे सिर पर रख दोगे?" एक पेड़ के नीचे बैठी एक बुढ़िया यामर से मदद मांगती हुई बोली।

यामर उसे नफरत की नज़र से देखता हुआ आगे बढ़ गया। "दादी माँ, इस गट्ठर को मैं उठा लेता हूँ।" यह कह कर सुजु ने गट्ठर उठा कर अपने सिर पर रख लिया। वह बुढ़िया के साथ उसकी झोंपड़ी तक गया और उसके दरवाजे पर गट्ठर रख दिया।

"तुम कितने अच्छे हो, मेरे बच्चे, तुमने मेरी

मदद की", बुढ़िया ने कहा। वह तब अन्दर से एक केक लाकर उसे देती हुई बोली, "तुम भूखे लगते हो। इस केक को खा लो। यह न केवल तुम्हारी भूख मिटायेगा, बल्कि तुम्हारे रोगों को भी, यदि कोई हो, ठीक कर देगा।"

सुजु बहुत खुश था। यद्यपि केक बहुत बड़ा न था, फिर भी उसने उसे अपने बीमार बच्चे को देने का निश्चय किया।

अभी वह कुछ ही कदम आगे बढ़ा होगा कि किसी ने उसे करुणा भरे स्वर में पुकारा: "हे पथिक, मैं भूख से मरा जा रहा हूँ। क्या खाने के लिए कुछ दे सकते हो?" एक पत्थर पर बैठे एक अनजान आदमी ने पुकारा। आह! लगता था, वह चन्द घड़ियों का मेहमान है। सुजु ने बिना सोचे विचारे झट उसे

केक दे दिया। मरणासन्न व्यक्ति ने उसे बड़ी रुचि के साथ खाया।

''हे भले आदमी, तुम्हारे लिए एक छोटी भेंट है। यह देखने में छोटी सचमुच है, परन्तु इसके काम बड़े हैं।'' अनजान आदमी ने कहा। फिर उसे उसने बाँस का बना एक पहिया दिया। इसमें एक हत्था लगा हुआ था। ''इससे अपनी जरूरत की चीजें माँग कर इसे दाईं ओर घुमाओ। जब वह चीज आवश्यकता भर आ जाये तब उसे बाईं ओर घुमा दो, ताके और देना वह बन्द कर दे! हमेशा के लिए इसका मुहताज न बनो। तुम्हें ईमानदारी से मेहनत करना चाहिये। जब आराम से रहने के लिए हर चीज काफी हो जाये तब इसे समुद्र में फेंक दो।''

सुजु ने उस अनजान आदमी को धन्यवाद दिया और वह आगे बढ़ गया।

उसे सहसा विश्वास न हुआ कि मामूली बाँस का एक पहिया उसकी जरूरत की चीजें ला देगा। उसे फिलहाल अपने बेटे की दवा के लिए कुछ धन की सख्त आवश्यकता थी। उसे विश्वास था कि उसका दोस्त यामर उसकी सहायता अवश्य करेगा।

यामर के घर पहुँचते-पहुँचते वर्षा होने लगी।

''मेरे दोस्त, मुझे कुछ धन की सख्त जरूरत है। मेरा बेटा बीमार है और....''

''सुजु, अन्दर आ जाओ और खाना खा लो। लेकिन क्योंकि अब मेरे अनेक दोस्त हैं, मैं सबके बेटों की बीमारी में कब तक मदद करता रहूँगा।'' यामर ने कहा। ''लेकिन मैं तुम्हारा ऋण पाई - पाई चुका दूँगा!''

''क्या मैं अपना उत्तर बार-बार दुहराता रहूँ।'' यामर ने कहा।

''धन्यवाद, इसकी जरूरत नहीं है।'' सुजु आह भरता हुआ लौट गया।

''यह क्या लाये पिता जी?'' सुजु के हाथ में बाँस का पहिया देखकर उसके बीमार बेटे ने पूछा।

''हा! हा!!'' सुजु मनोव्यथा के साथ हँस पड़ा और बोला, ''अरे यह? इससे उम्मीद की जाती है कि यह हमें कुछ खाना देगा!'' उसने मजाक से कहा और दाईं ओर उसका हत्था घुमाया।

और सचमुच देख! भोजन के अनेक प्रकार वहाँ मौजूद थे। सुजु ने हत्थे को बाईं ओर घुमाया। सुजु, उसकी पत्नी और उसका बच्चा, सभी अवाक् रह गये। सुजु ने तब पहिये से बेटे के लिए दवा मांगी। दवा हाजिर हो गई। बच्चे ने दवा खा ली और वह चंगा महसूस करने लगा। उसके बाद मूसलधार वर्षा होने लगी। सुजु की छत से पानी चूने लगा। ''एक अच्छा- सा घर हमें चाहिये।'' उसने इच्छा प्रकट की जो तुरन्त पूरी हो गई।

पूरा गाँव यह देख कर आश्चर्य से चकित रह गया कि अब सुजु के पास उस इलाके का सबसे

सुन्दर भवन है। यामर ने आँखें फाड़-फाड़ कर देखा। "यह कैसे सम्भव हुआ?" उसने पूछा। "प्रभु की कृपा है!" सुजु ने कहा।

धीरे-धीरे सुजु ने पहिये से आराम के लिए जरूरत की हर चीज हासिल कर ली।

यामर के मन की शान्ति चली गई और उसकी नींद हराम हो गई। रात-रात भर जाग कर वह सुजु के घर के चारों ओर मंडराने लगा और खिड़की से झाँक कर यह पता लगाने लगा कि उसकी समृद्धि का रहस्य क्या है।

एक रात उसने देखा कि सुजु ने अपने इष्ट देवता की प्रस्तर प्रतिमा की मांग कर पहिये को दाईं ओर घुमाया। प्रतिमा के प्रकट होते ही उसने अपनी पत्नी से कहा, "अब हमें पहिये को समुद्र में बिसर्जित कर देना चाहिये। हमारे पास काफी चीजें हैं। हमें मेहनत से काम कर खाना हमेशा याद रखना चाहिये।" "तुम ठीक कहते हो।" सुजु की पत्नी ने कहा।

यामर ने अब रहस्य को जान लिया। उसने ध्यान से देख लिया कि सुजु ने पहिये को कहाँ रखा है। आधी रात को उसने किसी तरह उसे चुरा कर ले जाने का प्रबन्ध कर लिया। दूसरे दिन वह एक नाव पर सवार हो निकट के एक छोटे टापू के लिए निकल पड़ा। वह एक महल बना कर उसमें सभी सम्भव आरामदायक चीजें सुसज्जित करना चाहता था। फिर वह बाद में अपने परिवार को भी वहाँ ले जाना चाहता था जिससे सुजु को यह सन्देह कभी न हो कि उसीने उसका पहिया चुरा लिया है।

उस नाव में यामर ने कुछ भोजन भी रख लिया था। एक घण्टे तक यात्रा करने के बाद उसे भूख लगी। वह खाना खाने लगा। बावर्ची भोजन में नमक डालना भूल गया था। "परन्तु कोई बात नहीं", यामर मुस्कुराया। उसने पहिये से नमक माँग कर उसे दाईं ओर घुमाया। तत्क्षण वहाँ उसके सामने नमक का ढेर लग गया। लेकिन पहिया और अधिक नमक उत्पन्न करता रहा। उसे यह नहीं मालूम था कि पहिये को नमक उत्पन्न करने से कैसे रोके।

अन्त में नमक के भार से नाव डूबने लगी। दोनों नाविक तैर कर वहाँ से गुजरती हुई दूसरी नाव पर चले गये। लेकिन यामर तैरना नहीं जानता था। वह नाव के साथ समुद्र में डूब गया।

लेकिन, कहा जाता है, पहिया निरन्तर नमक देता गया। पूरा समुद्र नमकीन हो गया। आज भी, जैसा कि बिश्वास है, पहिया नमक देता जा रहा है। यही कारण है कि वर्षा कितनी भी होती रहे, समुद्र के पानी का खारापन कम नहीं होता।

-बिश्वबसु

समाचार झलक

गिनीज की व्यंजन-सूची में कृमियाँ

सामान्य रूप से सभी यह जानते हैं कि कृमियों और सर्पों से चीनी स्वाद के लिए स्वादिष्ट पकवान बनाये जाते हैं। 'स्नेक मानो'' अथवा सी.मनोहरन, जो चेन्नई के निकट ताम्बरम का रहनेवाला है, विश्व रिकार्ड बनाने के लिए केवल ३० सेकेण्ड में, प्रत्येक १० से.मी. लम्बा, २०० केंचुए निगल गया। वह दावा करता है कि पिछले तीन सालों में उसने कीड़े या सर्प का भक्षण नहीं किया है। इसके पहले? हमलोग सिर्फ अनुमान लगा सकते हैं कि ये सब इसके दैनिक भोजन के अंग होंगे। क्या तुम जानना नहीं चाहोगे कि उसका नाम स्नेक मानो कैसे पड़ा? अच्छ, यह २६ वर्षीय मनोरंजक, छोटे सरीसृपों को, नागों को सम्मिलित कर, अपनी नाक में डाल कर मुँह से निकाला करता था!

डाक के थैले पर्वतीय दर्रे पर चढ़े

नाथू ला भारत और चीन के मध्य १४,५०० फुट ऊँची घाटी है। सामान्य तौर पर घाटी के उस पार कोई भी कभी नहीं जाता। लेकिन एक अपवाद है। प्रति रविवार को एक चीनी डाकिया मि.यी.डाक का एक थैला लाता है, भारतीय क्षेत्र में अधिक से अधिक तीन मिनट तक ठहरता है और खाली हाथ लौट जाता है। प्रति बृहस्पतिवार को एक भारतीय डाकिया मि.बहादुर सिंह चीनी सीमा को पार करता है, डाक का थैला जमा करता है और तीन मिनट के अन्दर लौट आता है। दोनों में से किसी के पास विदेशी क्षेत्र में रहने का वीसा नहीं है, लेकिन वे हर रोज नियमित रूप से अपना कर्त्तव्य करते हैं।

THE ADVENTURES OF G-man

THE DAILY

THE BIG THIRST

एक बड़ी प्यास
भाग 2

अब तक की कहानी ... पानी की एक रहस्यमय महामारी दुनियाभर में फैल रही है। पेड़-पौधे, जानवर, इंसान सभी इसका शिकार हो रहे हैं। अब इससे आगे...
सूर्यराज अपना मनपसंद एनर्जी फ़ूड पारले-जी खाता है।
Parle-G
ऐसी मान्यता है कि जी-मैन बनने से पहले सूर्यराज एक पल के लिए
सूर्य प्रकाश को अपने अंदर समेट लेता है। शायद इसीलिए क्षण भर के लिए अंधेरा छा जाता है।
और ये परिवर्तन कोई देख नहीं पाता।
G-man
शैतानों का विनाशक
जी-मैन आग का एक गोला बनकर उड़ जाता है।
G-man के लिए पावर सप्लाय
पारले-जी
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com
चन्दामामा जनवरी 2005 - 32

आग का वह गोला पानी की टंकी के पास आता है।

THOOOOOOOOOOOMP!

KHADDANG

हॅलो!
कोई है!!

G-man के लिए पावर सप्लाय

Parle-G

Visit: www.parleproducts.com

SPLONCK
FZOOOOOOSHHH
FZOOOOOOSHHH
SHLOMP
G-man के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

AOOGHH!

तुम्हारी इतनी हिम्मत! **ग्लुग्गा** का मुकाबला करना चाहते हो!

ग्लुग्गा पानी से खेलना मुझे बहुत पसंद है।

तो अब दूसरा राउंड खेलें।

ZZRAAKKK
ही...ही...ही!
गुद्गुली हो रही है!
SPLAT
SPLOSSH
लगता है तुम ऐसे नहीं मानोगे!
G-man के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

WHOOOPP
UWNGHH
OOOOOFFFPPPPP
HNN
NGNNN
SPLOSH
SPLOSSH
AAARRRRRRR
HAHA
HAHAHAHHAH
ZWOOSHH
ZWOOSHH

BLIP
BLIP
ऑर्ब! ये राक्षस किससे बना है?
मेरे हिसाब से ये बर्फ़, पानी, भाप और एक अज्ञात प्रोटोप्लाज़्मा से मिलकर बना है। इसे हम पानी की चौथी अवस्था भी कह सकते हैं। ये बहुत ही अस्थायी होता है।
मुझे अपने शैतान दोस्त को किसी भी एक रूप में लाना होगा।
पर कैसे?
कैसे?
G-man के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

जी-मैन एक आग का गोला बन जाता है।
कब तक तुम यूं बचते रहोगे। बहुत ही जल्द मैं तुम्हें बंदी बना लूंगा।
पर जी-मैन के दिमाग़ में एक अलग ही प्लान चल रहा है।
SSSSZZZZZZZZZZZZZZZZZZZZ
दोस्त अगर तुमने साइंस की क्लास में ज़रा भी ध्यान दिया होता तो तुम्हें पता चलता कि मैं क्या कर रहा हूं!
HUH!!!
SPLOT
G-man के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

SSSSSZZZZZZZZZZZZZZZZZZZZZZZZZZZHHHHHHHHHHHHH
SPLOT
SPLOT
SPLOT
SPLOT
जी-मैन हाइ-एनर्जी का इस्तेमाल कर पानी के राक्षस को भाप में बदल देता है।
नहीं SSSSSSSSSS
अब खेल का कुछ-कुछ मज़ा आ रहा है।
SSSSSZZZZZZZZZZZZZZZZZZZ
तकलीफ़ देने वालों से मुझे नफ़रत है।
SSSSSZZZZZZZZZZZZZHHHHHHH
जी-मैन की बुद्धिमानी से एक और तबाही होते-होते बच गई।
G-man के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

लगता है मेजर सूर्यराज ने जी-मैन के एक अविश्वसनीय कारनामे को देखने का एक और मौका खो दिया ।
सूर्यराज, जी-मैन ने पूरी दुनिया को एक बार फिर बचा लिया। वाकई! ये तो कमाल हो गया।
मुझे तो ऐसा नहीं लगता। अगर लोग पीने के पानी को उबालकर पीएं तो ऐसा कुछ भी नहीं होगा।
पानी की महामारी से जुड़ी समस्या को सुलझा लिया गया है। ज़िंदगी अब फिर से सामान्य हो चली है।
NEWS at 9
जी-मैन का ख़ात्मा होने ही वाला था कि उसके पहले उसने राक्षस ग्लुग्गा को भाप बनाकर उड़ा दिया।
दूर कहीं
हूं! पर अब मेरी मदद से ग्लुग्गा दुबारा नाकाम नहीं होगा!!
CLICK
G-man के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

1. दरअसल जी-मैन है ________________
   - क. अमरीश पुरी
   - ख. मेजर सूर्यराज
   - ग. टैरोलीन

2. टैरोलीन जिस बिल्डिंग में रहता है उसका नाम है ________________
   - क. मलोरी टावर्स
   - ख. पेट्रोना टावर्स
   - ग. टी-टावर

3. मेजर सूर्यराज जब जी-मैन नहीं होता, तब वो ____________ होता है.
   - क. टीचर
   - ख. नाई
   - ग. कैक्टस

4. जी-मैन बनने के लिए मेजर खाता है ____________
   - क. पपीता
   - ख. पारले-जी
   - ग. गाजर का हलवा

5. जी-मैन का साथी है ____________
   - क. ऑर्ब
   - ख. उसका दायां हाथ
   - ग. चमत्कारी कुत्ता-मोती

जवाब : 1-ख, 2-ग, 3-क, 4-ख, 5-क

सुपरहीरोज़ के लिए पावर सप्लाय

Visit: www.parleproducts.com

पाठकों के लिए कहानी प्रतियोगि ता

सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टि के लिए २५० रु.

निम्नलिखित कहानी को पढ़ो:

एक सुविख्यात विद्वान एक बार नाव से एक नदी पार कर रहा था। वह अकेला मुसाफिर था। नाविक ने कहा, "सर, दूसरे किनारे तक पहुँचने में काफी समय लग सकता है। हमलोग क्यों नहीं आनन्दपूर्वक अपना समय बितायें?"

"हाँ, हाँ, क्यों नहीं?" विद्वान ने मुस्कुराते हुए कहा।

"अपनी बातचीत को रोचक बनाने के लिए", नाविक ने सलाह दी, "हमलोग यह समझौता कर लें कि यदि आप मेरे प्रश्न का उत्तर न दे सकें तो मुझे दो रुपये देंगे। और यदि मैं उत्तर न दे सकूं तब मैं एक रुपया दूँगा, क्योंकि मैं गरीब और अनपढ़ हूँ।"

"बहुत अच्छा", विद्वान ने कहा, "अब तुम मुझसे पहला प्रश्न पूछ सकते हो।"

नाविक ने अपना सिर खुजलाया। "यह बतायें,सर, किस पक्षी के एक सौ पंख होते हैं और वह रात में उड़ता है और दिन में सोता है?"

- क्या कल्पना कर सकते हो कि विद्वान ने क्या उत्तर दिया होगा?
- समझौते का फैसला कैसे किया गया?

अपनी प्रतिक्रिया १००-१५० शब्दों में लिखो और कहानी को एक उपयुक्त शीर्षक दो। अपनी प्रविष्टि नीचे दिये गये कूपन के साथ एक लिफाफे में भेज दो जिस पर लिखा हो"पढ़ो और प्रतिक्रिया दो।"

अन्तिम तिथिः जनवरी ३१, २००५

नाम --उम्र-----------जन्मतिथि------------------------

विद्यालय --कक्षा-----------

घर का पता---

--पिनकोड----------------------

अभिभावक के हस्ताक्षर   प्रतियोगी के हस्ताक्षर

चन्दामामा इंडिया लिमिटेड

८२, डिफेंस ऑफिसर्स कालोनी, इक्कातुथंगल, चेन्नई - ६०० ०९७.

आन्ध्र प्रदेश की एक लोक कथा

मिला राजकुमार को पुनर्जीवन

स्वप्नसुन्दरी राजा महेन्द्र की बेटी थी। अपनी मृत्यु से पूर्व उसने अपने सातो बेटों का विवाह कर दिया। राजा की मृत्यु के समय सुन्दरी बहुत छोटी थी। शीघ्र ही रानी भी सुन्दरी को उसकी भाभियों की देखरेख में छोड़कर स्वर्ग सिधार गई।

सुन्दरी के सभी भाई उसे बहुत प्यार करते थे, लेकिन उनकी पत्नियाँ उसे अपनी नौकरानी समझती थीं और प्राय: उसके बारे में शिकायत किया करती थीं। शीघ्र ही महल में उसका जीवन दुखमय हो गया। फिर भी, उसने अपने भाइयों से कभी कुछ शिकायत नहीं की। एक दिन सुन्दरी ने सोचा कि अब मुझसे उनका अपमान सहा नहीं जायेगा। ''अब मैं तुम सब के बारे में अपने भाइयों को बता दूँगी!'' सुन्दरी ने भाभियों से कहा। उस समय उसके भाई महल में नहीं थे, इसलिए उन सब ने उसे महल से निकाल दिया। ''चले जाओ यहाँ से, महल में तुम्हारे लिए कोई स्थान नहीं है।''

''ठीक है, मैं चली जाऊँगी, लेकिन मैं स्वयं ही किसी राजकुमार से विवाह करने के बाद लौट आऊँगी।''

''मानों कोई राजकुमार तुमसे विवाह करने के लिए प्रतीक्षा कर रहा है।'' उन सबने उसकी हँसी उड़ाई। ''चले जाओ, और चन्दन राजा से विवाह होने पर भी लौट कर कभी न आना।''

सुन्दरी ने तुरन्त महल छोड़ दिया। उसकी छोटी भाभी उसके पीछे दौड़ी आई, ''कपड़ों की यह गठरी लेती जा। तुम्हारी शादी में ये काम आयेंगे। और यह चावल अपने चन्दन राजा को खिला देना।'' सुन्दरी जब महल का फाटक पार कर रही थी, तब उसकी भाभियाँ ठहाके मार कर उस पर हँस रही थीं।

महल से बाहर जाते समय उसके मन में एक ही विचार था, चन्दन राजा। उसने इसके पहले

इसका नाम कभी नहीं सुना था। उसने निश्चय किया, जो भी हो, उसके बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करेगी और वह जहाँ भी होगा, उससे अवश्य मिलेगी।

सुन्दरी को सामने से कुछ स्त्रियाँ आती हुई दिखाई पड़ीं। उन्हें रोककर उसने किसी एक से पूछा, "बहन, क्या तुम बता सकती हो कि चन्दन राजा से मैं कहाँ मिल सकती हूँ?"

सुन्दरी ने देखा कि उस स्त्री का चेहरा अचानक उदास हो गया। "चन्दन राजा?" स्त्री ने दूसरी स्त्रियों की ओर देखते हुए कहा, "लेकिन वह तो बहुत पहले मर चुका है!"

"क्या वह राजा था? किस राज्य पर उसका शासन था?" स्वप्नसुन्दरी ने जानना चाहा।

"वह दक्षिण में कहीं का राजा था", स्त्री ने लापरवाही से जवाब दिया और दूसरी स्त्रियों के साथ जाकर मिल गई।

सुन्दरी अब दक्षिण की ओर चल पड़ी और कई दिनों तक चलने के बाद एक अरण्य में पहुँची। एकान्त स्थान में एक विशाल महल देख कर उसे आश्चर्य हुआ। उस भवन के चारों ओर देखने पर उसे कोई दिखाई नहीं पड़ा। वह उजाड़ लगता था।

वह साहस बटोर कर भवन के निकट गई और एक द्वार खुला देख कर उसके अन्दर प्रवेश कर गई। सामने के एक कमरे में उसने एक कुत्ते को और एक बिल्ली को देखा। उसे आश्चर्य हुआ, "क्या ये इतने विशाल भवन के वासी हैं या इसके रखवाले?" जब कुत्ता भौंकने लगा और बिल्ली म्याऊँ-म्याऊँ करने लगी तब उसे यह विचित्र नहीं लगा। सुन्दरी ने समझा कि ये भूखे हैं। उसने अपनी गठरी खोल कर चावल के कुछ दाने धरती पर बिखेर दिये। शायद चावल कुत्ते और बिल्ली के लिए कुछ नया था, क्योंकि उसे उन्होंने रुचि के साथ खाया।

सुन्दरी ने कुत्ते को अन्दर जाकर एक पैकेट लाते देखा। उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने कुत्ते को बात करते सुना, "यदि तुम मुझे और चावल दो तब लाल चूर्ण का यह पैकेट ले सकते हो।"

"इसमें क्या कोई खास बात है?" सुन्दरी ने पूछा।

"यदि कोई विवाहित स्त्री इसे अपने ललाट पर लगा ले तो उसका पति दीर्घजीवी होगा और यदि अविवाहित स्त्री लगा ले तो उसे मन पसन्द पति मिलेगा।" कुत्ते ने कहा।

सुन्दरी ने कुत्ते को अपनी गठरी से निकाल कर कुछ और चावल दे दिया। और फिर उस लाल चूर्ण को उसने अपने ललाट पर लगाया।

तभी बिल्ली भी अन्दर जाकर चूर्ण का एक दूसरा पैकेट ले आई। "इस सफेद चूर्ण का पैकेट ले लो और इसके बदले मुझे कुछ और चावल दे दो।" बिल्ली ने कहा।

इस चूर्ण से मुझे क्या लाभ होगा?" सुन्दरी ने बिल्ली से पूछा।

बिल्ली ने कहा, "यदि तुम इसे अपनी आँखों में लगा लो तो तुम किसी को दिखाई नहीं दोगी, जबकि तुम दूसरों को देख सकती हो।" स्वप्नसुन्दरी ने बिल्ली को कुछ और चावल दे दिया।

दोनों कृतज्ञ पशुओं ने सुन्दरी को बताया कि यह भवन एक राक्षस का है जो राहगीरों को मार कर खा जाता है और जूठन बचाखुचा हमें दे देता है। वे मनुष्य के मांस से ऊब चुके थे, इसीलिए उन्हें सुन्दरी का दिया हुआ चावल बहुत स्वादिष्ट लगा। उन्होंने सुन्दरी को चेतावनी दी कि वह अधिक देर तक महल में न ठहरे, नहीं तो राक्षस वापस आते ही उसे मार देगा।

सुन्दरी ने बचा हुआ सारा चावल उन्हें दे दिया और तुरन्त वहाँ से चली गई। उसने बड़ी सावधानी से अरण्य को पार किया और किस्मत से उसे राक्षस कहीं नहीं मिला। अरण्य से लगा एक जंगल था जिसके पार जाने पर ही सही रास्ता तथा कोई गाँव मिलता। जब वह जंगल में थी तभी रात हो गई लेकिन फिर भी वह चलती गई। तभी कुछ दूरी पर उसे एक रोशनी दिखाई पड़ी।

यह रोशनी एक दूसरे विशाल भवन से आ रही थी जो एक महल के समान था। सुन्दरी को यह देख कर आश्चर्य हुआ कि यह महल सुनसान और निर्जन है। उसने धीरे-धीरे कुछ कमरों में जाकर झांका। लेकिन वहाँ किसी मानव उपस्थिति का कोई चिह्न नहीं मिला। अचानक उसकी नज़र महल के बीचोबीच एक खुले प्रांगण पर पड़ी, जहाँ एक विशाल वृक्ष के नीचे एक चबूतरा था। उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ जब उसने चबूतरे पर एक सुन्दर नौजवान को लेटे हुए देखा। सुन्दरी ने उसे बहुत देर तक बहुत ध्यान से देखा। वह जीवित नहीं लगता था। लेकिन वह मृत भी नहीं लगता था। सुन्दरी

ने प्रतीक्षा करने का निश्चय किया। वह चबूतरे के एक कोने में बैठ गई जो तेज चाँदनी में साफ दिखाई दे रहा था।

आधी रात जब होने को थी, तब नौजवान के शरीर में जीवन के लक्षण दिखाई देने लगे। शीघ्र ही वह नौजवान उठ बैठा और आँखें मलने लगा। "परियो, परियो! तुम क्यों नहीं आईं?" उसने स्वतः कहा।

"यहाँ कोई परी नहीं है, महाशय!" स्वप्न सुन्दरी ने कहा।

तभी युवक को किसी बाहरी व्यक्ति की उपस्थिति का भान हुआ। "तुम कौन हो? कहाँ से आई हो? यहाँ कैसे आई?"

सुन्दरी निकट आती हुई बोली, "मेरा नाम स्वप्न सुन्दरी है। मैं एक राजकुमारी हूँ और मेरे सात भाई हैं। मेरी भाभियों ने मुझे महल से निकाल दिया और अब मैं अनाथ हूँ। मैं चन्दनराजा की खोज में हूँ और उससे विवाह करने की आशा रखती हूँ।"

"मैं ही चन्दनराजा हूँ और मैं भी राजकुमार हूँ", युवक ने कहा, "लेकिन मुझे सन्देह है कि तुम मुझसे विवाह करोगी, क्योंकि मैं दिन भर और आधी रात तक मृत रहता हूँ। उसके बाद कुछ घण्टों के लिए ही मैं जीवित रहता हूँ।"

"हे राजकुमार, तुम परियों की बात कर रहे थे। वे कौन हैं?" सुन्दरी ने पूछा।

"यह एक लम्बी कहानी है," युवक ने कहा, "मुझे नहीं मालूम कि अपने बारे में बताने के लिए समय काफी होगा कि नहीं, लेकिन मैं इसे संक्षेप में कहूँगा। नहीं तो तुम्हें अगली आधी रात तक प्रतीक्षा करनी होगी। जब मैं नींद से जगूँगा।"

थोड़ी देर रुकने के बाद उसने कहना शुरू किया, "मेरे पिता के, जो एक राजा थे, बहुत दिनों तक कोई संतान नहीं थी। एक बार शिकार अभियान के दौरान वे जंगल में भटक गये और एक आश्रम में पहुँच गये। वहाँ रात्रि में विश्राम करने के बाद वापस आते समय मुनि ने उन्हें चन्दन के फूलों की एक माला देकर कहा, "इसे रानी को पहना देना। इस माला में जीवनदान देने की शक्ति है। मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूँ कि रानी एक मृत बच्चे को जन्म देगी। परन्तु इस माला के पहनते ही वह जीवित हो जायेगा। तुम दोनों इस बात का ध्यान रखना कि बालक हमेशा माला को

धारण किये रहे और माला उससे कभी अलग न हो।''

''राजा ने राज्य में वापस जाकर वह माला रानी को पहना दी। कालक्रम में रानी ने सचमुच एक मृत बालक को जन्म दिया। लेकिन जैसे ही उसे माला पहनाई गई, उसमें प्राण का संचार हो गया। बालक हमेशा उस माला को धारण किये रहने लगा। जब वह बड़ा हो गया तब एक दिन वह महल की छत पर सो गया। उस रात को कुछ परियों ने उसे देखा और उसके चारों ओर नृत्य किया। एक परी राजकुमार से विवाह करना चाहती थी। लेकिन राजकुमार को यद्यपि कोई आपत्ति नहीं थी फिर भी उसने इसलिए मना कर दिया कि परी उसे परी लोक में ले जाना चाहती थी। उसने इसलिए राजकुमार की माला झपट ली। अगली सुबह वह मृत पाया गया। चन्दन की माला गायब थी। यह स्पष्ट था कि किसी ने राजकुमार से, जो अब चन्दन राजा के नाम से प्रसिद्ध था, वह माला ले ली थी।

''माला की सर्वत्र खोज-बीन शुरू हुई, लेकिन महल में वह कहीं नहीं मिली। राजा और रानी ने निश्चय किया कि शरीर को न जलाया जायेगा और न समाधिस्थ किया जायेगा, क्योंकि उन्हें आशा थी कि किसी दिन माला का पता चलेगा और राजकुमार को फिर से जीवित किया जा सकेगा।

''इसलिए उन्होंने जंगल में एक सुन्दर महल बनाया और उसके प्रांगण में एक चबूतरे पर चन्दन राजा के शरीर को रख दिया। सप्ताह में एक बार राजा और रानी उस महल में जाते, उसके शरीर के पास बैठकर रोते और फिर वापस आ जाते। यह स्पष्ट था कि राजा और रानी इस बात से अनभिज्ञ थे कि माला एक परी के अधीन है।''

यह कहानी कहते-कहते सुबह होने लगी और वह थकावट महसूस करने लगा। वह तुरंत लेट गया और निष्प्राण हो गया। सुन्दरी ने राजकुमार के पुनः जीवित होने की आशा से आधीरात तक वहीं बैठे रहने का निश्चय किया। दिन में उसने राजा और रानी को वहाँ पर आकर चबूतरे पर बैठते हुए देखा। वे वहाँ कुछ देर रो-धो कर चले गये।

क्योंकि राजकुमारी ने अपनी आँखों पर सफेद चूर्ण मल लिया था, वह राजा और रानी को दिखाई नहीं पड़ी।

आधी रात के लगभग शरीर में पुनः जीवन आ गया। "हे राजकुमार, परियाँ यहाँ कब आयेंगी? मैं उस परी से चन्दन की माला लेने की कोशिश करूँगी। मैं अपने को अदृश्य रखना जानती हूँ।" सुन्दरी ने कहा।

चन्दन राजा कुछ बोले, इसके पहले ही एक स्वर्गीय संगीत सुनाई पड़ा। राजकुमार ने कहा, "लगता है, परियाँ आ रही हैं। गुलाबी पंखवाली पर ध्यान देना, उसीने मेरी माला ली है।" इतना कहकर वह लेट गया।

परियाँ चबूतरे के चारों ओर नाचने लगीं। गुलाबी पंखवाली परी ने माला से राजकुमार के शरीर को स्पर्श किया। वह जाग गया। परी ने अपने प्रश्न को दुहराया, "क्या मुझसे विवाह नहीं करोगे, राजकुमार?"

"मैं करूँगा, लेकिन तुम्हें मेरे साथ महल में रहना होगा। क्या ऐसा करना चाहती हो?"

"मैं यह कैसे कर सकती हूँ? मैं परीलोक की रहनेवाली हूँ। और कहीं अन्यत्र नहीं रह सकती।"

परी उठी और ऊँचे चबूतरे से जैसे ही नीचे उतरी, वह किसी चीज से ठोकर खाकर गिर पड़ी। वह अदृश्य सुन्दरी थी। क्षण भर में उसने परी के गले से माला निकाल ली।

परी के स्पर्श से सुन्दरी की अगोचर होने की शक्ति खत्म हो गई और वह माला के साथ अपने असली रूप में दिखाई पड़ने लगी। गुलाबी पंखवाली परी के मुख से चीख निकल पड़ी, "मित्रो, हमें एक मानव ने देख लिया है!" वे सब पलक मारते ही अदृश्य हो गईं।

सुन्दरी अब जल्दी से चबूतरे पर गई और राजकुमार के गले में माला डाल दी। और देखो! राजकुमार अब खड़ा हो गया और सुन्दरी के हाथों को अपने हाथों में लेकर बोला, "हे मधुर राजकुमारी! तुमने मुझे फिर से नया जीवन प्रदान किया है। चलें, हम अपने माता-पिता से मिलते हैं। वे बहुत आनन्दित होंगे।"

वे दोनों राजधानी जाकर राजा और रानी से मिले। उनके आनन्द की सीमा न रही जब उन्हें यह भी मालूम हुआ कि स्वप्न सुन्दरी के कारण ही राजकुमार को पुनर्जीवन मिला है। उन्होंने सहर्ष उसे अपनी बधू बना लिया।

विवोहोपरान्त चन्दन राजा और स्वप्न सुन्दरी जंगल के महल में आनन्दपूर्वक रहने लगे।

कुबेर का सरोवर

ब्रह्मदत्त जब काशी राज्य पर शासन करते थे, उन दिनों बोधिसत्व उनके पुत्र के रूप में पैदा हुए। राजा ने उनका नामकरण महाशासन किया। थोड़े महीने बाद रानी ने एक और पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम सोमदत्त रखा गया।

दोनों पुत्रों की पैदाइश के दो साल बाद रानी का देहांत हो गया। इस पर राजा ने दूसरा विवाह किया। कुछ समय बाद नई रानी ने भी एक पुत्र को जन्म दिया। यह ख़बर सुनते ही राजा बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने रानी से कहा, ''रानी, इस शुभ अवसर पर तुम कोई वर मांग लो।''

''यह वर मैं अपनी ज़रूरत के बक़्त मांग लूँगी।'' रानी ने जवाब दिया।

छोटी रानी के पुत्र का नाम आदित्य था। उसने राजोचित सारी विद्याएँ सीख लीं। जब आदित्य जवान हो गया, तब एक दिन रानी ने राजा से कहा, ''महाराज, आपने आदित्य के जन्म के समय वर मांगने को कहा था, उसे अब मैं मांगती हूँ। आप आदित्य को युवराजा के रूप में अभिषेक कीजिए।''

यह सुनकर राजा निश्चेष्ट हो गये और थोड़ी देर सोचकर बोले, ''मेरी पहली पत्नी के दो पुत्रों के होते हुए आदित्य को मैं युवराजा कैसे बना सकता हूँ? यह न्याय संगत नहीं है।''

मगर रानी को जब भी मौक़ा मिलता वह अपने पुत्र को युवराजा बनाने की इच्छा प्रकट कर राजा को सताने लगी। राजा ने भांप लिया कि रानी अपना हठ नहीं छोड़ेगी। उनके मन में यह संदेह भी पैदा हुआ कि रानी के द्वारा बड़े राजकुमारों की कोई हानि भी हो सकती है। इसलिए वे उन्हें बचाने का उपाय दिन-रात सोचने लगे।

राजा ने एक दिन अपने दोनों बड़े पुत्रों को बुलवाकर सारी बातें समझाईं और बोले, ''तुम दोनों थोड़े समय के लिए नगर को छोड़कर कहीं और रह जाओ। मेरे बाद तुम्हीं लोगों को यह राज्य प्राप्त होगा, इसलिए उस बक़्त लौटकर राज्य का

भार संभाल सकते हो। तब तक तुम दोनों भूल से भी इस राज्य के अन्दर प्रवेश न करना।''

अपने पिता की इच्छा के अनुसार महाशासन और सोमदत्त नगर को छोड़कर जब राज्य की सीमा पर पहुँचे, तब उन लोगों ने देखा कि छोटा राजकुमार आदित्य भी उनके पीछे चला आ रहा है। तीनों मिलकर कुछ दिनों के बाद हिमालय के जंगलों में पहुँचे।

एक दिन वे तीनों अपनी यात्रा की थकान मिटाने के लिए एक पेड़ के नीचे बैठ गये। उस वक़्त महाशासन ने आदित्य से कहा, ''मेरे छोटे भैया! उधर देखो, एक सरोवर दिखाई दे रहा है! तुम वहाँ जाकर अपनी प्यास बुझा लो और हमारे लिए कमल पत्रों वाले दोने में पानी ले आओ।''

आदित्य जाकर ज्यों ही सरोवर में उतरा, त्यों ही जल पिशाच उसे पकड़ कर जल के नीचे वाले अपने घर में ले गया। बड़ी देर तक आदित्य को न लौटते देख महाशासन चिंतित हुआ और इस बार महाशासन ने सोमदत्त को भेजा। उसको भी जल पिशाच ने पकड़ लिया।

थोड़ी देर तक इंतजार करने के बाद महाशासन अपने भाइयों को लौटते न देख खतरे की आशंका करके तलवार लेकर ख़ुद चल पड़ा। वह सरोवर में उतरे बिना किनारे पर खड़े हो पानी की ओर परख कर देख रहा था। इसे भांपकर जल पिशाच ने अंदाजा लगाया कि ये अपने भाइयों के जैसे जल्दबाजी में आकर जल में न उतरेंगे।

इसके बाद जल पिशाच एक बहेलिये का वेष

धरकर महाशासन के पास आया और बोला, ''खड़े खड़े देखते क्या हो? प्यास लगी है तो सरोवर में उतर कर प्यास क्यों नहीं बुझाते?''

यह सलाह पाकर महाशासन ने सोचा कि दाल में कुछ काला है, तब बोला, ''तुम्हारा व्यवहार देखने पर मुझे शक होता है कि तुमने ही मेरे दोनों भाइयों को गायब कर डाला है।''

''तुम तो विवेकशील मालूम होते हो। मैं सच्ची बात बता देता हूँ, ज्ञानी लोगों को छोड़ बाक़ी सभी लोगों को, जो इस सरोवर के पास आते हैं, पकड़ कर मैं बन्दी बनाता हूँ। यह तो कुबेर का आदेश है!'' जल पिशाच ने कहा।

''इसका मतलब है कि तुम ज्ञानियों से उपदेश पाना चाहते हो! मैं तुम्हें ज्ञानोपदेश कर सकता हूँ! लेकिन थका हुआ हूँ।'' महाशासन ने

कहा। झट जल पिशाच उसे पानी के तल में स्थित अपने निवास में ले गया। अतिथि सत्कार करने के बाद उसे उचित आसन पर बिठाया। वह ख़ुद उसके चरणों के पास बैठ गया।

महाशासन ने जो कुछ अपने गुरुओं से सीखा था, वह सारा परम ज्ञान जलपिशाच को सुनाया। दूसरे ही क्षण जलपिशाच बहेलिये का रूप त्यागकर अपने निज रूप में आकर बोला, ''महात्मा, आप महान ज्ञानी हैं! मैं आपके भाइयों में से एक को देना चाहता हूँ। दोनों में से आप किसको चाहते हैं?''

''मैं आदित्य को चाहता हूँ।'' महाशासन ने कहा।

''बड़े को छोड़ छोटे की मांग करना क्या धर्म संगत होगा।'' जलपिशाच ने पूछा।

''इसमें अधर्म की बात क्या है? अपनी माँ की संतान में से मैं बचा हुआ हूँ, ऐसी हालत में मेरी सौतेली माँ के भी एक पुत्र तो होना चाहिए न? अपने भ्रातृ-प्रेम से प्रेरित होकर यह भोला आदित्य हमारे पास चला आया है। अगर हम दोनों बड़े भाई नगर को लौट जायें, तब लोग हमसे पूछें कि आदित्य कहाँ है? तब हमारा यह कहना कहाँ तक न्याय संगत होगा कि जलपिशाच ने उसे निगल डाला है?'' यों महाशासन ने जलपिशाच से उल्टा सवाल पूछा।

इस पर जलपिशाच ने महाशासन के चरणों में प्रणाम करके कहा, ''आप ज़ैसे महान ज्ञानी को मैंने आज तक नहीं देखा है, मैं आपके दोनों छोटे भाइयों को मुक्त कर देता हूँ। आप लोग इस जंगल में मेरे अतिथि बनकर रहिए!''

इस पर महाशासन और उसके छोटे भाई जलपिशाच के अतिथि बनकर रह गये। थोड़े समय बाद उन्हें ख़बर मिली कि उनके पिता ब्रह्मदत्त का स्वर्गवास हो गया है। इस पर महाशासन अपने दोनों छोटे भाइयों तथा जलपिशाच को साथ ले काशी चले गये।

महाशासन का राज्याभिषेक हुआ। तब उसने सोमदत्त को अपने प्रतिनिधि के रूप में तथा आदित्य को सेनापति के पद पर नियुक्त किया। अपना उपकार करने वाले जलपिशाच के वास्ते एक सुंदर निवास का प्रबंध किया और उसकी सेवा के लिए नौकर नियुक्त किया।

विष्णु पुराण

सुग्रीव किष्किंधा का राजा बना। उसने बालि के पुत्र अंगद को युवराज बना दिया और उसी को राजकाज का कार्य सौंप कर स्वयं सुख भोगों में डूब गया और रामचंद्र को सहायता के लिए दिया वचन भूल गया। तब लक्ष्मण धनुष धारण किये किष्किंधा पहुँचे। हनुमान ने सुग्रीव को समझाया कि रामचंद्र जी का कार्य शीघ्र संपन्न करना हमारा प्रथम कर्तव्य है।

सुग्रीव ने सीताजी की खोज के लिए वानरों को चारों दिशाओं में भेज दिया। अंगद, हनुमान और जांबवान जब दक्षिणी दिशा की ओर जाने लगे तब रामचंद्र जी ने अपने हाथ की अंगूठी निकाल कर हनुमान को देते हुए कहा कि उसे मेरी पहचान के रूप में सीताजी को दे दें।

वानर सीता जी की खोज करते-करते दक्षिण के समुद्री तट पहुँचे और सोचने लगे, "जटायु ने सिर्फ़ यही बताया था कि रावण सीताजी को लेकर दक्षिण दिशा में चला गया है, पर यह कोई नहीं जानता कि वह किस ओर मुड़ गया और सीताजी को कहाँ पर छिपा दिया?" यों वानर सोच ही रहे थे तभी जटायु का बड़ा भाई संपाति नामक पर्वताकृति वाला पंखहीन पक्षी वानरों को खाने के लिए वहाँ धीरे से चल कर पहुँच गया।

किसी जमाने में जटायु और संपाति ने सूर्यमंडल तक उड़ने की होड़ लगायी थी। जटायु उड़ नहीं पाया और उसने अपना प्रयत्न छोड़ दिया। संपाति उड़ कर चला गया और उसके पंख जल गये। इसलिए दक्षिणी समुद्र तट पर नीचे गिर गया और जो प्राणी उसे मिल जाते थे उन्हें खा कर अपना पेट भरने लगा।

संपाति ने वानरों की बातचीत से सारा वृतांत जान लिया और अंगद को अपनी पीठ पर बिठाकर समुद्र के पार स्थित लंका नगरी दिखायी। वानर आपस में विचार करने लगे कि सौ योजन तक फैले हुए समुद्र को लांघ कर लंका तक पहुँचने वाला वानर यहाँ कौन है?

ऋषियों ने हनुमान को उसके बचपन में शाप दिया था कि वह अपनी शक्ति और सामर्थ्य को भूल जाएगा। यह बात जांबवान जानता था। उसने हनुमान को याद दिलाया, ''हनुमान तुम बड़ी आसानी से समुद्र को लांघ कर रामचंद्र जी के कार्य को संपन्न कर सकते हो।''

इस पर हनुमान ने रामचंद्र जी का स्मरण किया और ज़मीन को छोड़ कर आसमान की ओर उड़ चले।

मारुति जब आकाश के मार्ग से समुद्र को लांघ रहे थे, तब उनकी शक्ति और युक्ति की परीक्षा लेने के लिए देवताओं ने सुरसा को भेजा।

सुरसा ने भयंकर राक्षसी की आकृति बना कर अपना मुँह फैला दिया। हनुमान ने भी अपने शरीर को उससे भी बड़ा बना दिया। सुरसा ने अपने मुख का और विस्तार किया। हनुमान भी अपने शरीर का विस्तार करने लगे। सुरसा ने अपना मुख फैलाकर हनुमान को निगलने की कोशिश की। लेकिन हनुमान ने अपने शरीर को लघु बना लिया और सुरसा के मुँह में घुस कर अपने शरीर को विशाल बना लिया और उसका पेट फाड़कर बाहर निकल आये। देवताओं ने हनुमान की शक्ति और बुद्धि दोनों की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

हनुमान जब समुद्र पर उड़ रहे थे तब राहु की माँ सिंहिका नामक एक जलराक्षसी ने हनुमान की छाया को पकड़कर खींचना शुरू किया। उन्होंने मुक्के मार-मार कर सिंहिका के प्राण ले लिये।

हनुमान इन सारे विघ्नों पर विजय प्राप्त करके आकाश मार्ग से उड़ रहे थे, तब सुवर्चला नामक एक सागर कन्या मछली के रूप में मुँह खोलकर आश्चर्य के साथ हनुमान की ओर देखने लगी। उस समय हनुमान के पसीने की एक बूंद उसके मुँह में जा गिरी। इस कारण सुवर्चला का गर्भ रह गया और उससे बाद में मत्स्यवल्लभ नामक पुत्र उत्पन्न हुआ।

लंका नगर की रक्षा करने वाली नगर देवी लंकिणी को जब हनुमान के आगमन की खबर मिली तो वह क्रोधित हो भयंकर रूप धारण कर अपना त्रिशूल उठा कर उन्हें मारने दौड़ी।

हनुमान ने सूक्ष्म रूप धारण कर अपने को बचा लिया और लंका के द्वार को पार करने लगे। लंकिणी ने हनुमान को इस तरह अपनी मुट्ठी में कस लिया जैसे मक्खी को पकड़ लिया जाता है। हनुमान ने लंकिणी की हथेली को काट डाला। लंकिणी की पकड़ ढीली हो गई और उसकी हथेली से खून बहने लगा। हनुमान ने उछल कर उसकी छाती पर जोर से मुक्का मारा। मुक्का खा कर लंकिणी का सर चकरा गया और वह बेहोश हो कर गिर पड़ी।

जब लंकिणी होश में आयी तो उसने हनुमान से कहा, ''हनुमान! एक बार मुझ से ब्रह्मा ने कहा था कि जिस वक्त मैं इस प्रकार बेहोश हो जाऊँगी, उस समय से लंका का पतन शुरू हो जायेगा। मैं शापवश आज तक एक क्षुद्र देवी के रूप में लंका नगर की रक्षा करती रही। अब मैं यहाँ से जा रही हूँ। अब तुम लंका में प्रवेश कर सकते हो।'' यों समझाकर वह गंधर्व नारी आकाश में उड़कर अदृश्य हो गयी।

हनुमान जब लंका नगर में पहुँचे तो वे मणिमय दीपकों, ऊँचे महलों और आँखों को चौंधियाने वाले लंका के वैभव को आश्चर्य से देखते रह गये।

सीता जी की खोज करते-करते वे अशोक वन में पहुँचे । वहाँ पर उन्हें राम नाम के स्मरण की ध्वनि सुनाई पड़ी। एक संगमरमर के मंडप में सीता जी रामचंद्र जी का स्मरण करते विलाप कर रही थीं। उस मंडप के चारों तरफ़ तलवार, भाले, त्रिशूल आदि आयुध धारण कर राक्षसियाँ पहरा दे रही थीं। मंडप के समीप के शिंशुपा पेड़ पर चढ़ कर हनुमान छिप कर सीता जी को देखते रहे। सीता जी मंडप से निकलकर अशोक वृक्ष के नीचे आ कर बैठ गयीं।

उसी समय रावण बड़े दर्प के साथ अशोक वन में प्रवेश कर रहा था। उसके पीछे देव, गंधर्व, नाग, यक्ष, राक्षस और स्त्रियाँ दल बाँध कर उसके वैभव का यश गा रही थीं।

रावण अशोक वृक्ष के पास पहुँच कर बोला, ''हे सीते! मेरी बात मानो। तुम क्षुद्र मानव राम पर भरोसा न रखो। यह बात सपने में भी न सोचो

कि राम लंका पहुँच सकेगा।''

इस पर सीता जी ने घास का एक तिनका लेकर कहा, ''हे रावण! सपने में भी यह मत सोचो कि मैं तुम्हारे बल, पराक्रम और वैभव को देख तुम्हारी वशवर्तिनी हो जाऊँगी। तुम महा नीच और दुष्ट हो। अब तुम्हारा अंतिम समय निकट है।

''तुम्हें तो रामचंद्र को युद्ध में हरा कर मुझे ले जाना चाहिए था। लेकिन तुमने ऐसा नहीं किया, क्योंकि तुम कायर हो। तुमने माया का सहारा लेकर चोर वृत्ति को अपनाया। मेरी यह दृढ़ कामना है कि रामचंद्र जी तुम्हारा संहार करें।'' सीता जी ने क्रोधावेश में कहा।

सीता जी की बातें सुनकर रावण रुष्ट होकर चला गया। जब अशोक वाटिका में पहरा देने वाली राक्षसियाँ चली गईं तब हनुमान पेड़ पर से उतर आये और सीता जी के हाथ में रामचंद्र जी की अंगूठी रख दी । हनुमान ने अपना विश्व रूप दिखाया जिस में उनके सर पर नक्षत्र फूलों की भांति शोभायमान थे। उन्होंने सीता जी से प्रार्थना की कि अगर वे उनकी पीठ पर बैठ जायें तो उनको रामचंद्र जी के पास पहुँचा देंगे।

''यह उचित नहीं है। उचित तो यह होगा कि रामचंद्र जी स्वयं आकर रावण का संहार करें और मुझे छुड़ा कर ले जायें। तब तक मैं अशोक वन में शोक निमग्न ही रहूँगी। ये बातें मेरी तरफ़ से तुम रामचंद्र जी से कह देना।'' इस के बाद सीता जी ने अपनी मांग की चूड़ामणि निकाल कर रामजी को देने के लिए हनुमान के हाथ में रख दिया।

हनुमान ने लंका में अपने प्रवेश की सूचना देने के विचार से अशोक वन को उजाड़ दिया। हनुमान का वध करने के लिए जंबुमाली, अक्षय आदि हजारों राक्षस उन पर टूट पड़े। हनुमान ने उन सब का संहार कर दिया।

रावण के ज्येष्ठ पुत्र इंद्रजित ने ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया। ब्रह्म के प्रति आदर व्यक्त करने के लिए हनुमान पल भर के लिए उस अस्त्र के अधीन हो गये और समय पाकर रावण को उचित सबक़ सिखाने के विचार से बंदी बन गये।

रावण ऊँचे सिंहासन पर विराजमान थे। नीचे लोहे की हथकड़ियों में बन्धे सामने खड़े हनुमान की ओर रावण ने दर्प के साथ परिहास पूर्ण दृष्टि

से देखा। हनुमान ने अपने शरीर का विस्तार किया और श्रृंखलाओं को तोड़ कर, रावण के सर के बराबर की ऊँचाई तक अपनी पूंछ को कुंडलाकृति में बढ़ा लिया और उस पर बैठ गए।

हनुमान ने रावण को संबोधित कर कहा, "हे राक्षसराज रावण! मैं रामचंद्र जी का दूत हूँ। रामचंद्र जी बानरों को ही महान वीरों के रूप में संगठित कर तुम्हारी लंका पर घेरा डालने की सामर्थ्य रखने वाले मानव श्रेष्ठ हैं। तुम अपने बल, पराक्रम पर दर्प न करो। तुम्हें यह बताने की कोई ज़रूरत नहीं है कि शक्तिशाली सर्प भी चींटियों के द्वारा तिल तिलकर मर जाता है। यदि कल्याण चाहते हो तो तुम सीताजी को रामचंद्रजी के हाथों में सौंप कर उनसे क्षमा माँग लो।"

हनुमान की बातों पर क्रुद्ध हो रावण ने अपनी तलवार खींच ली। इस पर विभीषण ने समझाया, "भैया! दूत का संहार नहीं करना चाहिए। वह पौरुष नहीं कहलाता।"

"ओह, ऐसी बात है। तब तो यह काम करो, इसकी पूँछ में कपड़े लपेट कर और उस पर तेल डाल कर आग लगा दो।" रावण ने आदेश दिया।

राक्षस भट हनुमान की पूँछ में कपड़ा लपेटने लगे। वे ज्यों ज्यों कपड़े लपेटते जा रहे थे, त्यों त्यों उनकी पूँछ का विस्तार होता जा रहा था। आखिर तेल भी खत्म हो गया। भटों ने पूँछ में आग लगा दी। हनुमान ने अपने शरीर का बिस्तार कर लिया और हुंकारते हुए इधर-उधर छलांग लगाने लगे। रावण के अंतः पुर के महल जल कर

भस्म हो गए। असंख्य राक्षस उस अग्नि की आहुति बन गये। पर विभीषण का महल ज्यों का त्यों सुरक्षित बना रहा।

हनुमान ने देखा कि अशोक बन में सीता जी सकुशल हैं। उसके बाद उन्होंने समुद्र में अपनी पूंछ डुबोकर आग बुझायी और चूड़ामणि के साथ रामचंद्र जी की सेवा में समुद्र तट पर वापस आ गए। रामचंद्र जी ने चूड़ामणि को देखते ही ऐसा अनुभव किया मानो सीता जी उनके सामने प्रत्यक्ष हैं। फिर उस मणि को अपने वक्ष से लगा लिया। हनुमान ने रामचंद्र जी को लंका दहन की सारी कहानी सुनायी।

रामचंद्र जी ने हनुमान को अपने कलेजे से लगाते हुए कहा, ''मैं ने तो सिर्फ़ सीता जी का पता लगाने को कहा था। तुम तो लंका जला कर ही लौटे। तुम्हारे जैसे वीर के रहते मेरे लिए कोई कार्य असम्भव न होगा। तुम ने सीता जी और मेरे बीच संधान का कार्य किया और हमें आनन्द पहुँचाया। तुम ज्ञानी और यशस्वी बनो।'' रामचंद्र जी ने हनुमान को आशीर्वाद देते हुए कहा।

रामचंद्र जी ने कोदण्ड धारण कर सीताजी के संकल्प के अनुसार रावण के संहार की दृढ़ प्रतिज्ञा की।

विभीषण रावण के सौतेले भाई थे। उन्होंने रावण को सलाह दी कि रामचंद्र जी के साथ शत्रुता मोल न ले और सीताजी को सौंप कर लंका नगर और लंकाबासियों को बचा ले।

''तुम्हारी हठधर्मिता और मूर्खता के कारण सारे राक्षस कुल को हानि पहुँचाना उचित नहीं है।'' विभीषण ने समझाया। इस पर रावण आग-बबूला हो उठा।

फिर गरज़ कर बोला, ''अरे, कायर! गलती से तुम्हारा जन्म राक्षस कुल में हुआ है। यह समझ लो कि शूर्पणखा का जो अपमान हुआ है, वह समस्त राक्षस कुल का अपमान है। तुम राक्षस कुलांगार हो। तुम इसी वक्त लंका को छोड़ कर चले जाओ। नहीं तो यदि तुम मेरी आँखों के सामने पड़ जाओगे तो तुम्हारे शरीर के टुकड़े कर दिये जायेंगे।'' विभीषण अपने अनुचरों के साथ लंका छोड़ कर चल पड़ा। ***(क्रमशः)***

विनय का शास्त्र ज्ञान

वेणु शर्मा प्रसिद्ध वैद्य हैं। अपने गाँव में ही नहीं, आसपास के गाँवों में भी उनकी बड़ी ख्याति है। हर कोई उनकी चिकित्सा-पद्धति की खूब प्रशंसा करता है। एक दिन रोगियों की जांच और उन्हें स्वास्थ्य संबंधी आवश्यक सलाह देने के बाद घर के अंदर जाने ही वाले थे कि बीस साल का एक युवक वहाँ आया। उसने शर्मा को सविनय प्रणाम किया।

वेणु शर्मा ने सोचा कि वह शायद किसी रोग से पीड़ित है और दवा लेने आया होगा। वे उससे पूछने ही जा रहे थे कि इतने में उस युवक ने आगे बढ़कर कहा, "मेरा नाम विनय है। पिछले दस सालों से प्रसिद्ध वैद्यों की सेवा में रह चुका है और वैद्य शास्त्र संबंधी बहुत-से ग्रंथों का पठन भी किया। वैद्य शास्त्र के बारे में अच्छी जानकारी भी पायी। आपकी सेवा करते हुए यहाँ भी रहना चाहता हूँ और स्वयं वैद्य बनकर रोगियों की चिकित्सा करना चाहता हूँ। कृपया आप मुझे इसकी अनुमति और आशीर्वाद दें।"

उसकी बातों को सुनते हुए वेणु शर्मा को लगा कि उसमें विद्या की मात्रा कम है और आवश्यकता से अधिक दंभ है। उन्होंने उस युवक से कहा, "मेरी सेवा-शुश्रूषा तुम किसी भी दिन शुरू कर सकते हो। अभी-अभी ख़बर मिली है कि शरभ ने अपने घर के पिछवाडे के केले के पेड़ के पत्तों को काटते हुए अपना हाथ काट लिया। उसकी फ़ौरन चिकित्सा होनी चाहिये। तुम ही बताओ कि अब क्या करें?"

विनय घबराता हुआ बोला, "सब ग्रंथ अपने अतिथि गृह में छोड़ आया हूँ। ऐसी दुर्घटनाओं की चिकित्सा कैसी हो, यह चरक में या सुश्रुत में क्या लिखा हुआ है, देखकर आता हूँ।" कहकर वह जाने लगा।

वेणु शर्मा ने उसे रोकते हुए कहा, "तुम अगर चरक व सुश्रुत ग्रंथों को पढ़ने लगोगे और उसके बाद ही चिकित्सा करोगे तो तब तक शरभ का पूरा का पूरा रक्त बह जायेगा और वह परलोक सिधार जायेगा। एक काम करना। अच्छा यही होगा कि कुछ और समय तक उन ग्रंथों का अध्ययन गंभीरतापूर्वक करते रहना।"

रमेश पाठक

अनोखी सूझ

बहुत दिन पहले की बात है। महोबा नामक गाँव में कई धनवान रहा करते थे। उसी गाँव में रामगुप्त नामक एक बनिया था। उसके दो पुत्र थे। बाप-बेटे सब मिल कर छोटा-मोटा व्यापार किया करते थे।

रामगुप्त एक जमाने में बड़ा धनी था। मगर व्यापार में उसने अपना सर्वस्व खो दिया था। अब उसके यहाँ सिवाय एक बड़ा घर के संपत्ति के नाम पर कुछ न था। फिर भी वह निराश नहीं हुआ। इस आशा से उसने पुनः व्यापार शुरू किया कि भविष्य में उसकी क़िस्मत खुल जायेगी। पहले की हालत में पहुँचने की प्रबल आशा उसके मन में बनी ही रही।

महोबा धनी गाँव था, इसलिए जब-तब लुटेरे उस गाँव पर हमला कर बैठते थे। लुटेरों के आने का समाचार मिलते ही गाँववाले अपनी सारी संपत्ति कहीं गाड़ देते अथवा अपने साथ लेकर दूसरे गाँवों में भाग जाते।

एक बार ऐसी ही आफ़त उस गाँव में आई। लुटेरों के आने की ख़बर मिलते ही सब ने अपने घर खाली कर दिये। मगर रामगुप्त ने अपने बेटों से कहा - ''बेटे, मैं तुम लोगों के साथ आ नहीं सकता। दो दिन यहीं-कहीं अपना सर छिपा लूँगा। हमारे पिछवाड़े में पुआल के ढेर में खाना पानी रख के चल जाओ।''

फिर क्या था, रामगुप्त के बेटे उसे बड़ी युक्ति के साथ पुआल के ढेर में छिपा कर भाग गये।

लुटेरे गाँव में आ ही गये। लुटेरे घर-घर की तलाशी ले रहे थे। उनका नेता घोड़े पर एक गली से होकर गुजरा। लुटेरों ने जो कुछ लूटा, उसे दो बोरों में भर कर घोड़े पर लाद दिया था। आख़िर लुटेरों के नेता की नज़र बहुत बड़े मकान और उसके पिछवाड़े पर पड़ी। वह घर और किसी का नहीं, बल्कि रामगुप्त का ही था।

लुटेरों का नेता जब उस घर में घुसा, तब मानों रामगुप्त की जान छटपटा उठी। रामगुप्त बड़ी

सावधानी से उसकी हरकतें देखता रहा।

लुटेरों के नेता ने अपने घोड़े को पुआल के ढेर के पास एक पत्थर से बांध दिया और बड़े ही इतमीनान से घर में घुस पड़ा। घोड़े को भूख लगी थी, वह घास चरने लगा।

मौक़ा पाकर रामगुप्त पुआल के ढेर से बाहर आया, घोड़े की पीठ पर से धन के बोरों को उतारा और घोड़े के रस्से को खोल दिया। तब वह उस धन के साथ ढेर के भीतर जा छिपा। रस्सा खुल जाने से घोड़ा दूर जाकर घास चरने लगा।

सारे घर की बड़ी देर तक तलाशी लेने पर भी लुटेरों के नेता के हाथ कुछ न लगा। उसने बाहर आकर देखा कि घोड़ा रस्सा तोड़ कर दूर जा घास चर रहा है और उसकी पीठ पर धन की गठरियाँ नहीं हैं।

लुटेरों का नेता यह सोच कर सारे पिछवाड़े में खोज रहा था कि कहीं गठरियाँ गिर तो नहीं गयी हैं। तभी उसके अनुचर वहाँ आ पहुँचे। उन्हें देखते ही लुटेरों के नेता ने आतुरता के साथ पूछा – ''क्या तुम लोगों में से किसी ने घोड़े पर से गठरियाँ निकालीं?''

चोरों ने एक दूसरे के चेहरे देखे। उनके मन में यह संदेह पैदा हो गया कि लूट के माल को छिपा कर वह ऐसा अभिनय कर रहा है। तब सभी लुटेरों ने मिल कर अपने नेता से पूछा, ''इस गाँव में हमें छोड़ एक भी प्राणी नहीं है। गठरियाँ तो भारी थीं, कैसे गायब हो सकती हैं?''

इसके बाद सबने गठरियों की खोज की, लेकिन कोई फ़ायदा न रहा। लुटेरों के नेता ने उन्हें खोजने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली।

दूसरे दिन लुटेरे महोबा को छोड़ चले गये। उनके जाने का समाचार मिलते ही गाँव वाले सब
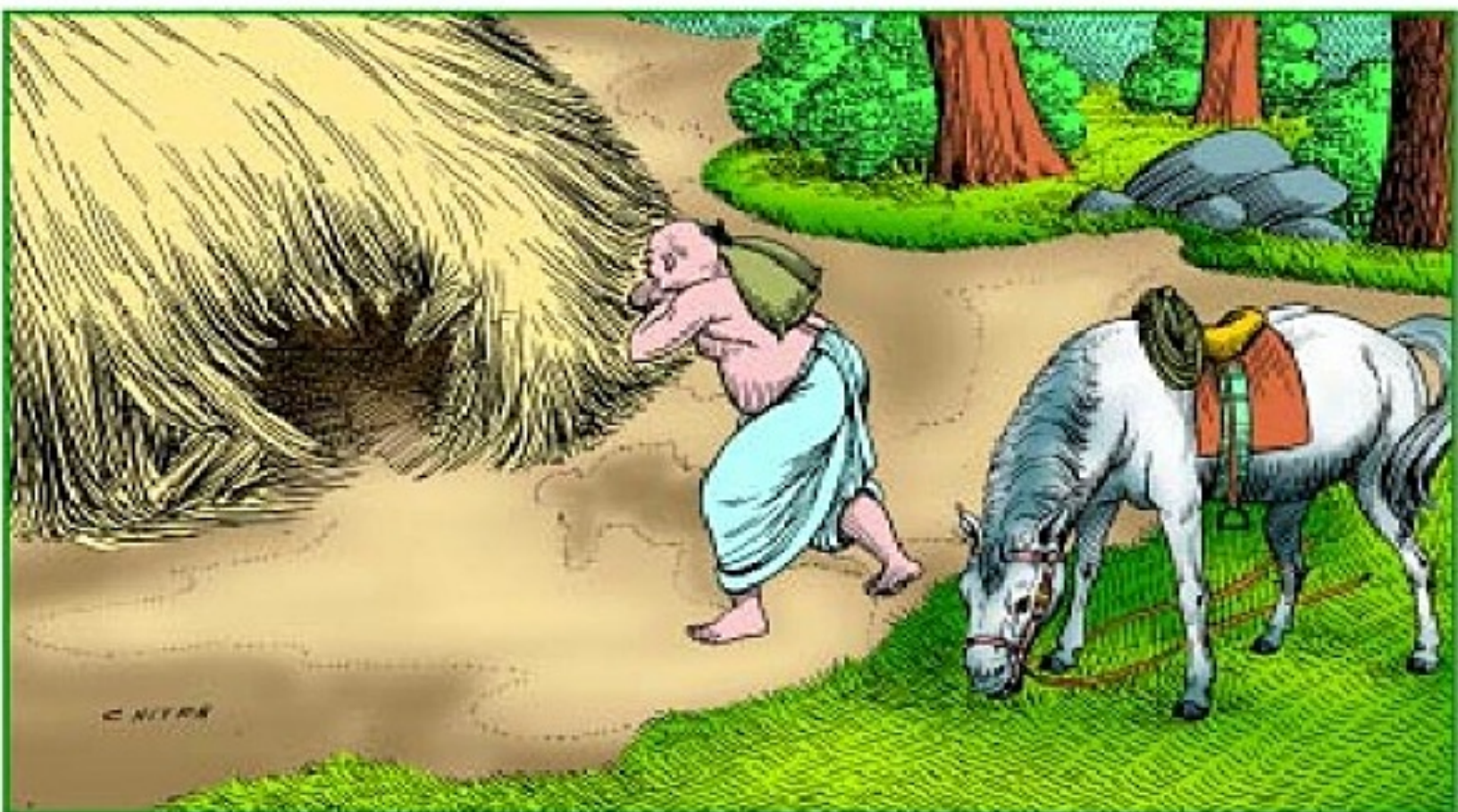
फिर गाँव में आ गये। रामगुप्त ने उन गठरियों को अपने ही घर में बडी होशियारी से छिपा रखा था। उसने अपने बेटों से भी यह बात नहीं कही। उसने सुन रखा था कि लुटेरों के नेता ने उन गठरियों की खोज करने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली है।

रामगुप्त ने जैसे सोचा था, वैसे लुटेरों का नेता अपने को घोड़ों का व्यापारी बताते उस गाँव में आया और वह गाँव के अमीरों के बारे में पूछ-ताछ करने लगा।

उसका उद्देश्य था कि हाल ही में अचानक जो धनवान बन गया हो, उसका पता लगा ले। रामगुप्त ने उसे देखते ही पहचान लिया।

रामगुप्त को संदेह हुआ कि चोर उसके घर उस रात को आ सकता है। इसलिए वह अपने पिछवाड़े पर बड़ी सावधानी से निगरानी रखे हुए था। उसकी शंका के अनुसार अंधेरे के फैलते ही लुटेरों का नेता चुपके से पिछवाड़े में घुस गया और घर की दीवार के पास दुबक कर बैठ गया। उसका विचार था कि घरवाले यदि धन के बारे में बातचीत कर ले तो सुने।

यह सब देखने वाले रामगुप्त ने अपने बेटों को बुला कर ऊँची आवाज़ में इस तरह कहा जिससे चोर भी सुन ले - ''बेटे, परसों मैं पुआल के ढेर से सूखी घास खींच रहा था तो घास के नीचे गहनों की दो गठरियाँ मिल गयीं।''

बेटों ने आश्चर्य से पूछा, ''ऐसी बात है! पर आपने हमें बताया तक नहीं?''

''बेटे, वे गठरियाँ किसकी हैं, जाने बिना मैं कैसे बताता! इसलिए मैंने उन्हें फिलहाल गुप्त रूप से छिपा रखा है।'' रामगुप्त ने कहा।

''कहाँ पर छिपा रखा है?'' बेटों ने पूछा।

''अपने कुएँ में डाल दिया है।'' रामगुप्त ने जवाब दिया।

''लुटेरों का नेता यह सुनकर बड़ा खुश हुआ। सब के सो जाने पर वह एक रस्सी को, चक्री से बाँध उसकी मदद से कुएँ में उतर पड़ा।

तुरंत रामगुप्त ने अपने बेटों को असली बात बता दी। तीनों ने जाकर रस्से को काट डाला। चोर के सर पर पत्थर फेंककर उसे मार डाला। फिर बाहर निकाल कर उसकी लाश को पिछवाड़े में ही गाड़ दिया। इसके बाद रामगुप्त जिंदगी भर धनी बन कर रहा।

आर्य

शान्तिपुर की गद्दी का अपहारक वीर सिंह शिकार के बहाने जंगल में विद्रोहियों की खोज करने जाता है। उस पर और उसके आदमियों पर वन के पशु आक्रमण कर देते हैं। एक सुन्दर युवक के आदेश पर पशु लौट जाते हैं। वीर सिंह वापस भागते समय आश्चर्य के साथ सोचता है कि यह युवक भला कौन है। इसी बीच जयनगर में खुदाई करने पर एक स्वर्ण प्रतिमा मिलती है। सरदार सुखदेव एक मन्दिर के निर्माण का आदेश देते हैं।

अज्ञात राजकुमार का रहस्य

चित्र : गांधी अय्या

सरदार सुखदेव अपने उद्यान में चहलकदमी कर रहे हैं। उनका एक अंग रक्षक उनके निकट आता है।

महोदय, शान्तिपुर से एक सन्देश वाहक आप से मिलना चाहता है?

शान्तिपुर? वीर सिंह के यहाँ से? अन्दर भेज दो।

राजा वीर सिंह ने आप को नमस्कार कहा है और आप को बकाया देने के लिए याद दिलाया है।

बकाया? मैं समझा नहीं।

हम शान्तिपुर को कोई बकाया नहीं देते।

हमारे राजा का कहना है कि जयनगर शान्तिपुर की जागीर है।

है तो क्या हुआ? हमने शान्तिपुर को कभी नज़राना नहीं दिया। आप के राजा जयनगर से और क्या चाहते हैं?

हमारे राजा को खुशी होगी यदि आप उन्हें स्वर्ण प्रतिमा सौंप दें।

सुखदेव अपने क्रोध को नियन्त्रण में रखते हैं।

प्रतिमा जयनगर की प्रजा की अमानत है और इसे किसी को सौंपने का मुझे कोई अधिकार नहीं है।

इस पर शासक का अधिकार है, जनता का नहीं।

यदि आप इसे नहीं सौंपते तो मुझे यह कहने का आदेश मिला है कि....
यदि उसे नहीं सौंपते तो उसे बलपूर्वक ले लिया जायेगा।
यह कनकदुर्गा की प्रतिमा है और इसके प्रतिष्ठापन के लिए हमलोग एक मन्दिर का निर्माण कर रहे हैं।
तुम वीर सिंह को जाकर बता दो कि जयनगर प्रतिमा देने से इनकार करता है।
यदि आप ऐसा चाहते हैं तो अवश्य बता दूँगा।
यह जयनगर के लिए शुभ नहीं है। हमें सभी सम्भावित परिस्थितियों के लिए तैयार रहना होगा।
शान्तिपुर में...
सुखदेव हमारी आज्ञा को चुनौती कैसे दे सकता है?
जबर, हमें जयनगर पर आक्रमण करना होगा!
महाराज, सबसे पहले हमें प्रतिमा को जयनगर से बाहर ले जाने से रोकना होगा।
सुखदेव के महल को सैनिक दो ओर से घेर लेते हैं। तीसरे दल को सरदार के महल में प्रवेश करना है। जबर सिंह तीनों कमानों से विचार-विमर्श करता है।
प्रतिमा को, अधिकार में कर लेने पर, नाव द्वारा शान्तिपुर ले जायेंगे।
. यह अधिक सुरक्षित होगा और हमें आक्रमण के बारे में चिन्ता नहीं करनी चाहिये।
महाराज, महल पर कब आक्रमण करें?
चलो, जयनगर के लिए चल पड़ें।

शान्तिपुर के सैनिक सरदार सुखदेव के महल को घेर लेते हैं।
क्या महल पर आक्रमण कर दें, सेनापति?
आगे बढ़ो और महल के सामने पंक्तिबद्ध रहो। यदि कोई विरोध करे तो आक्रमण कर दो।
जब्बर सिंह एक कमान के साथ महल की ओर जाता है।
सरदार का एक पहरेदार सैनिकों को महल की ओ र बढ़ते हुए देखता है।
बढ़ते चलो।
महाराज! हमारे एक आदमी ने सैनिकों को महल को घेरते हुए देखा है।
करने दो। हम विरोध नहीं करेंगे।
दूसरा पहरेदार अन्दर आता है।
सेनापति के समान दीखनेवाला एक आदमी महल की ओर बढ़ रहा है।
जरूर जब्बर सिंह होगा! उसे आने दो।
मैं शान्तिपुर का सेनापति जब्बर सिंह हूँ। मैं स्वर्ण-प्रतिमा को लेने आया हूँ।
मैंने आप के सन्देश वाहक को ब ता दिया था कि हम इसे नहीं दे सकते।
हम लोग प्रतिमा के लिए एक मन्दिर का निर्माण कर रहे हैं और शीघ्र ही पूजा आरम्भ हो जायेगी।
लेकिन यह धरती से निकाली गई है, इसलिए इस पर राज्य का अधिकार है, जयनगर का नहीं।
हमलोग प्रतिमा को अपवित्र नहीं कर सकते। इसका स्था न मन्दिर में है। जनता को इसकी पूजा करने का अधिकार है।
सिर्फ यह बता दो कि प्रतिमा कहाँ है?
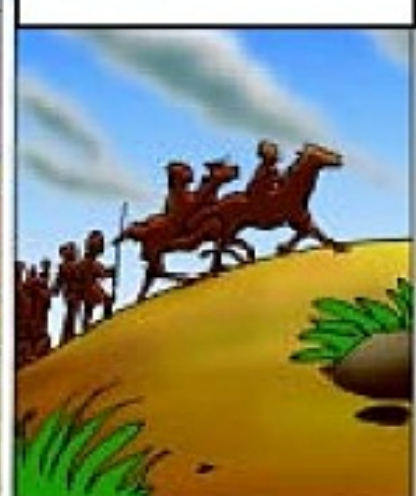
जबर सिंह अपनी धाँस जमाने की कोशिश करता है।
मैं कहता हूँ कि तुम उसे बाहर निकालो। यह राजा की आज्ञा है। अन्यथा हम बलपूर्वक ले जायेंगे!
मैं कनकदुर्गा देवी के नाम पर रक्तपात नहीं चाहता। जैसी तुम्हारी मर्जी हो, वैसा करो!
जबर सिंह कमान को संकेत देता है।
इधर आओ! अपने साथ एक सैनिक को ले आओ।
कमान एक सैनिक के साथ प्रतिमा को ढूँढने के लिए महल में प्रवेश करता है।
उम्मीद है, जल्दी ही हम प्रतिमा को ढूँढ निकालेंगे।
प्रतिमा से निकलती हुई चकाचौंध कर देनेवाली रोशनी से कमान और सैनिक को मार्गदर्शन मिलता है। जब वे कमरे में प्रवेश करते हैं, उनकी आँखें चौंधिया जाती हैं।
ओह! कितनी चमक है!
इसे हम कैसे ले जा सकते हैं?
क्रमशः

तुम्हारे लिए विज्ञान

भोजन लवणयुक्त क्यों, लवणमुक्त क्यों नहीं?

एक चुटकी नमक भोजन को स्वादिष्ट बनाने में जादू के समान काम करता है। नमक के बिना भोजन किसी को पसन्द नहीं आयेगा। यह सभी स्वादों में वृद्धि कर देता है। इसके अतिरिक्त, नमक में परिरक्षक गुण हैं।

सच तो यह है कि खारापन और मिठास दो स्पष्ट रूप से मुख्य स्वाद हैं। इसलिए लोगों में इसको खाने के लिए स्वाभाविक ललक रहती है।

सबसे पहले चीनियों ने बड़े कड़ाहों में समुद्र के पानी को बाष्प बना कर नमक बनाना शुरू किया। समुद्री नमक सेंधव नमक से भिन्न होता है।

मानव शरीर में लगभग ४ औंस नमक रहता है। शरीर में पर्याप्त मात्रा में नमक न रहे तो मांस पेशियों में संकुचन नहीं होगा, रक्त प्रवाहित नहीं होगा, भोजन नहीं पचेगा और हृदय में धड़कन नहीं होगी। वैज्ञानिक हमें अब तक यह नहीं बता पाये कि कितना नमक पर्याप्त होना चाहिये और कितना खाने से बहुत अधिक माना जायेगा। यद्यपि नमक खाना हम सब के लिए महत्त्वपूर्ण है, फिर भी हमें सावधानी बरतनी चाहिये कि ज्यादा न खा लें।

तुम्हारा प्रतिवेश

सब्जी का नाश्ता

नाश्ते को सामान्य रूप से दिन का बहुत महत्वपूर्ण भोजन माना जाता है। इसलिए दिन आरम्भ करने के लिए पौष्टिक नाश्ता करने की अपेक्षा और बेहतर तरीका क्या हो सकता है? ऐसे भोजन का, जो पूर्ण रूप से प्राकृतिक है, कोई विकल्प नहीं हो सकता! आम नाश्ता–पाव रोटी, मक्खन, सलामी तथा दूध, के कुछ आश्चर्यजनक प्राकृतिक विकल्प यहाँ दिये जा रहे हैं।

दक्षिण एशिया में पाया जानेवाला आर्टोकारपस, जिसे प्रायः ब्रेड ट्री कहा जाता है, शहतूत के वृक्ष का सजातीय है। इसके फल में स्टार्च अत्यधिक मात्रा में होता है और इससे ताजे ब्रेड की सी खुशबू आती है।

अफ्रीका में एक बटर ट्री है। इसके बीज को पीस कर जब उबाला जाता है तब यह मक्खन जैसा हो जाता है।

अफ्रीका में ही सलामी ट्री भी पाया जाता है, क्योंकि इसके फल देखने में सलामी जैसे लगते हैं।

मिल्क ट्री वेनेजुएला में पाया जाता है। इसका मीठा रस स्वाद में सामान्य दूध की तरह लगता है।

आप के पन्ने आप के पन्ने

क्या तुम जानते थे?

व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति

क्या यह आश्चर्यजनक नहीं है कि किसी की मात्र हस्तलिपि का अध्ययन कर आप बता सकें कि वह किस तरह का व्यक्ति है? लिपि विज्ञान एक सुपरिभाषित विज्ञान है।

लिपिशास्त्री कलम के दबाव, दिशा तथा लिपि के आकार के आधार पर विश्लेषण करते हैं। हस्तलिपि के द्वारा किसी के चरित्र की ठीक-

ठीक भविष्यवाणी करने के लिए विषय का गहरा अध्ययन होना आवश्यक है।

यहाँ कुछ आधारभूत लिपि शास्त्र सम्बन्धी तथ्य दिये जा रहे हैं: बड़े अक्षर लिखनेवालों को अहंकारी और स्वभाव से बहिर्मुखी माना जाता है।

मध्यम आकार की लिपि वालों में अद्भुत आत्म-संयम होता है, जबकि जो छोटे अक्षर घसीट कर लिखते हैं, वे पहचान के संकट से ग्रस्त रहते हैं।

अपने भारत को जानो

हमारे देश में विश्व के सभी प्रमुख धर्मों के अनुयायी रहते हैं, इस महीने की प्रश्नोत्तरी इन धर्मों पर आधारित है।

१. बौद्ध लोगों के लिए भारत में सबसे पवित्र स्थान कौन-सा है?

२. पारसी लोग अपने पूजा-स्थल को क्या कहते हैं?

३. किस सिख गुरु ने खालसा पंथ की स्थापना की?

४. जैन धर्म के दो सम्प्रदाय क्या-क्या हैं?

५. मुस्लिम कैलेण्डर किस वर्ष से आरम्भ माना जाता है?

(उत्तर पृष्ठ ७० पर)

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

NARAYANAMURTY TATA

NARAYANA MURTY TATA

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा, प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०००९७.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए | सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/- रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा |

बधाइयाँ

विजयी प्रविष्टि

पुलकित श्रीवास्तव
C/o. श्री गिरीश बख्शी
ब्राह्मण पारा, राजनन्द गाँव
छत्तीस गढ़- ४९१४४१.
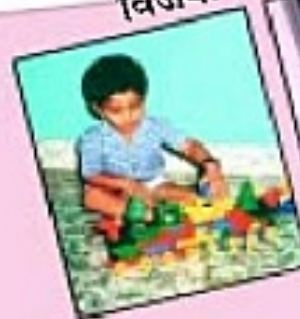
देखो यह बच्चों की नकली रेल
सायकिल -सवारी का असली खेल

अपने भारत को जानो के उत्तर

१. सारनाथ
२. अंजुमन (अग्नि मन्दिर)
३. गुरु गोविन्द सिंह-दसवें गुरु
४. दिगम्बर और श्वेताम्बर
५. सन् ६२२ ईसवी

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 26 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor : B. Viswanatha Reddi (Viswam)

वायु को प्रदूषण से बचायें!

वीना की सहपाठिनी और उसकी सबसे अच्छी सहेली श्रेया, आज दूसरे दिन भी अनुपस्थित थी। कल शाम को वीना ने श्रेया के घर फोन किया था। नौकरानी ने फोन उठाया, ''बेबी की तबीयत ठीक नहीं है। उसे डॉक्टर के पास ले गये हैं।''

परिश्रमी श्रेया कभी क्लास में अनुपस्थित नहीं रहती। वह सचमुच बीमार होगी। वीना मिलने चली जाती है और उसे पीली, मुरझायी-सी, बिस्तर में पड़ी देख कर हैरान रह जाती है।

''अंटी, श्रेया को क्या हो गया?'' वीना पूछती है।

''उसे ब्रोंकाइटिस् हो गया है'', श्रेया की माँ बताती है। ''डॉक्टर कहता है कि यह वायु-प्रदूषण से हुआ है - वह हवा में मिश्रित पेट्रल तथा कारखाने के धुएँ की सांस लेती है! उसे कम से कम एक सप्ताह तक आराम और दवा लेने की जरूरत है।''

दूसरे दिन, क्लास में, वीना श्रेया की दुर्दशा के बारे में अपनी अध्यापिका से कहती है। अध्यापिका क्लास को बताती है, ''प्रदूषण आधुनिक जीवन के सबसे बड़े खतरों में से एक है। वायु - शुद्ध प्राणदायक वायु - मानव को प्रकृति की अमूल्य भेंट है। लेकिन हमने अपने को उसके अयोग्य सिद्ध कर दिया है। श्रेया की बीमारी वायु-प्रदूषण के सम्भावित कुप्रभावों में से केवल एक है।''

एक छात्रा प्रश्न करती है, ''मिस, वायु-प्रदूषण को रोकने के लिए हम क्या कर सकते हैं?''

''तुम अपने विचार के अनुसार क्या कर सकते हो?'' अध्यापिका उलटा प्रश्न करती है। छात्राएँ सोचती हैं और परामर्श आने लगते हैं।

''हमलोग कार से जाने की बजाय पैदल या सायकिल से स्कूल जा सकती हैं!'' ''आतिशबाजी से प्रदूषण होता है; हम दिवाली और अन्य ऐसे अवसरों पर इसका वर्जन कर सकती हैं।'' ''हमलोग प्रौढ़ों में वायु प्रदूषण के प्रति जागरूकता फैलाने का प्रयास भी कर सकती हैं।''

''बहुत अच्छे!'' अध्यापिका कहती है। ''एक परामर्श और है - जहाँ भी सम्भव हो सके, अधिक से अधिक संख्या में वृक्ष लगाओ। वायु को शुद्ध रखने में वृक्ष महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।''

''हमलोग करेंगी'', छात्राएँ वादा करती हैं।